सोफ़ोक्लीज़्

कृत

शहंशाह इडिपस

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

[थीब में शाही महल के सामने, सीढ़ियों पर और कुर्बानगाह के इर्द-गिर्द थीब के शहरी फरियाद करने की गर्ज से बैठे हैं।

दरम्याने दरवाज़े से इडिपस अपने ख़ादिमों के साथ दाख़िल होता है।]

इडिपस : अज़ीज़ो, ख़ानदाने कैडमस की बेल पर, खिलनेवाले नये फूलो, इस फरियाद का मकसद क्या है ? ये शाखें, ये फूलों के हार, ये शहर में फैला हुआ मुक़द्दस धुआँ, ये दुख-दर्द को दूर करनेवाली दुआएँ, ये कर्बा-ओ-यास की ग़म्माज़ी करनेवाली चीखें किसलिए ? किसी खबरसाँ पर यकीन न करते हुए, हम बजात-ए-खुद वजह दरयाफ्त करने के लिए आये हैं। हम—इडिपस—जिसके नाम का डंका, चहार आलम में बज रहा है।

राहब की तरफ़ देखकर

मोहतरिम बुजुर्ग ! आप ही बतायें—ये माजरा क्या है ? किसी बात का डर है, या किसी चीज की ख्वाहिश है ? बिला ख़ौफ-ओ-ख़तर बयान करें। हम संगदिल नहीं हैं। हम आपकी दरख़ास्त पर, ज़रूर ग़ौर करेंगे।

राहब : ऐ शहंशाह ! मेरे मालिक ! आज यहाँ बूढ़े, बच्चे और जवान सब जमा हैं। मैं ज़ीयस का पुजारी, आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ। हमारे अलावा और दूसरे लोग इसमेनस दरिया के किनारे और पैलास की कुर्बानगाह और मुक़द्दस दरगाहों के इर्द-गिर्द बैठे हैं।

आप जानते हैं, हमारा शहर, मौत के ऐसे भँवर में फँस गया है, जिससे बच निकलने का, कोई रास्ता नज़र नहीं आता ! आज इस

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

मुल्क की ज़रखेज़ मिट्टी पर, खलियानों पर और आनेवाली मासूम ज़िन्दगियों पर, मौत का साया ग़ालिब है और बीमारी का भूत ख़ानदाने-ए-कैडमस के महलों को, लोगों की चीख़-ओ-पुकार से जहन्नुमज़ार बनाने पर तुला हुआ है।

आज मैं और ये फ़रियादी, आपके हुज़ूर में इसलिए नहीं आये कि आप देवताओं के बराबर हैं, बल्कि इसलिए कि आप एक अज़ीम इन्सान हैं। हमको वो दिन भी याद है, जब आप इस शहर में अजनबी थे और यहाँ के हालात का आपको कोई इल्म न था। फिर भी आपने, उस माफ़ूक-उल-फ़ितरत साहिरा की पहेली बूझ-कर, उसका सहर तोड़ा था। हमें यक़ीन है, देवताओं की रज़ा से ही, आपने हमें ज़िन्दगी दी थी।

ऐ अज़ीम इडिपस ! हमें फिर आपकी मदद की ज़रूरत है। गुज़रे हुए वाक़ये की बिना पर, हम कह सकते हैं कि आप कोई-न-कोई तरकीब ज़रूर ढूँढ़ निकालेंगे।

ऐ अशरफ़-उल इन्सान ! अब फिर हमें ज़िन्दगी वापिस दिला ! अपनी शोहरत का खयाल कर ! किसी को ये कहने का मौक़ा न दे कि तेरे अहद की खुशहाली, सिर्फ़ चन्द रोज के लिए थी। ऐ रहबर-ए-मुल्क ! एक बार फिर हमारी रहनुमाई कर ! ऐ शहंशाह ! ज़िन्दा इन्सानों का शहंशाह बन, वीरानों का नहीं !

इडिपस : मेरे बच्चो ! हम बहुत ग़मज़दा हैं। यक़ीन करो ! हमें तुम्हारी तकलीफ़ात का खूब एहसास है। हमारी हालत भी कोई बेहतर नहीं ! आपके अपने ग़म हैं, अपनी फिकरें हैं, लेकिन हमें, अपने ग़मों और अपनी फिकरों के अलावा, आपकी फिकरों का वज़न भी उठाना पड़ता है। हम बेख़बर नहीं हैं। आपकी बहबूदी का ख़याल, हमें हर वक़्त बेचैन किये रहता है।

हमने मैनोसियस के बेटे क्रियान को, अपोलो की ईथियन दरगाह की जानिब, रवाना किया है ताकि आपकी बहबूदी के कार-ए-नेक में, देवताओं के हुक्म की तामील भी हो। आज का दिन उसकी वापसी का दिन था, हमें तशवीश हो रही है, वो अभी तक क्यों नहीं आया ?

बहरहाल हम यक़ीन दिलाते हैं, देवताओं का जो भी हुक्म होगा, उस पर बिना तआम्मुल अमल किया जायेगा।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

राहब : शहंशाह का इक़बाल बुलन्द हो।
बाहर देखते हुए
वो देखिए ! क्रियान की आमद के आसार नजर आ रहे हैं···हाँ, वो आ रहा है।

इडिपस : हम उसके चेहरे पर, खुशी के नकूश देख रहे हैं···ऐ अपोलो ! वो अच्छी खबर लाया हो ?

राहब : यक़ीनन, अच्छी खबर होगी। वो देखिए उसके सर पर शाखों का ताज, इस बात का गवाह है।

इडिपस : हमें और मुन्तज़िर नहीं रहना पड़ेगा। हमारी आवाज़, उसको छू सकती है। ऐ अज़ीज़-ए-मन क्या खबर है, देवताओं ने हमारे लिए क्या हुक्म दिया है ?

क्रियान : आकर
अच्छी खबर है शहंशाह। हालात साज़गार रहे तो ग़म के बादल छँट जायेंगे।

इडिपस : लेकिन पैग़ाम क्या है ? तुम्हारी खामोशी, हमारे लिए सौहान-ए-रूह बन रही है।

क्रियान : आप सबकी मौजूदगी में सुनना पसन्द करेंगे या महल में चलें ?

इडिपस : सबकी मौजूदगी में बयान करो ! किसी से कोई पर्दा नहीं।

क्रियान : तो सुनिए ! देवता फीबस का कहना है कि कोई नापाक वजूद, हमारी सरज़मीन पर, परवरिश पा रहा है, जिसकी वजह से, यहाँ की फ़िज़ा मुकदर हो रही है। इससे पहले कि उसकी मौजूदगी, थीब की तबाही का बायस बने, इस सरज़मीन को पाक किया जाय !

इडिपस : नापाक़ वजूद ! सरज़मीन को पाक किया जाय ?

क्रियान : इस आफत की वजह, एक कत्ल है। कातिल को, जलावतन किया जाय या खून का बदला, खून से लिया जाय !

इडिपस : क़त्ल ! क्या देवताओं ने मक़तूल का नाम बताया ?

क्रियान : हाँ, मक़तूल हमारे मरहूम शहंशाह लायस थे, जो आपसे पहले, यहाँ के हुकमरान थे।

इडिपस : हम जानते हैं, हालाँकि हमें उनके दीदार नसीब नहीं हुए।

क्रियान : देवताओं का हुक्म है, लायस के क़ातिल को, सजा दी जाय !

इडिपस : क़ातिल को कहाँ तलाश करें ? माज़ी के इस जुर्म की धुँधली तसवीर के नकूश, कैसे उजागर किये जायें ?

क्रियान : देवताओं ने कहा है, ढूंढनेवाले को रास्ता मिल ही जाता है।

16927

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

इडिपस : लायस की मौत—ये बेरहम मौत, यहाँ पर हुई थी या मुमालिक-ए-ग़ैर में, सफ़र करते हुए ?

क्रियान : वो यहाँ से, देवताओं की ताज़ीम के लिए, रवाना हुए थे लेकिन वापिसी, उनके नसीब में न थी।

इडिपस : कोई हमसफ़र नहीं था, जिसने यह हादसा देखा हो और जिसका बयान बतौर-ए-शहादत इस्तेमाल किया जा सके ?

क्रियान : सब-के-सब मारे गये। सिर्फ़ एक, अपनी जान बचाने में कामयाब हुआ लेकिन वो भी, कोई क़ाबिल-ए-ज़िक्र बात न बता सका।

इडिपस : कुछ तो कहा होगा ? मुमकिन है, एक हल्का-सा इशारा ही मंज़िल की जानिब रहनुमाई कर सके।

क्रियान : उसका बयान था कि चन्द लुटेरों ने शहंशाह के आदमियों पर, अचानक हमला कर दिया और सबको मौत के घाट उतार दिया।

इडिपस : लुटेरे बज़ात-ए-खुद, इतनी हिम्मत नहीं कर सकते। ज़रूर यहाँ से उनकी सरपरस्ती की गयी होगी !

क्रियान : हमारा भी यही ख़्याल था। लेकिन कोई क़दम उठाने से पहले ही, हम दूसरी ही आफ़त में फँस गये।

इडिपस : ऐसी कौन-सी आफ़त थी, जिसने आपको सरबराह-ए-मुल्क़ की, मौत की तफ़्तीश से बाज़ रखा ?

क्रियान : उस जादूगरनी की पहेलियों ने, हमें ऐसा उलझाया कि हम किसी भी, दूसरी जानिब तवज्जो न दे सके।

इडिपस : अब हम तफ़्तीश का आग़ाज करेंगे। और तमाम पोशीदा वाक़यात को, रोज-ए-रौशन की मानिन्द मंज़र-ए-आम पर लायेंगे। अपने फ़र्ज़ की याद-दहानी के लिए, हम फीबस के शुक्रगुज़ार हैं और क्रियान, जिस जज़्बे के तहत तुम मरहूम की जानिब, अपने फ़र्ज़ की अदायगी कर रहे हो, हम उसकी भी तारीफ़ करते हैं। हम इस मुल्क़ की बहबूदी के लिए, और देवताओं के हुक्म की तामील के लिए, कोई कसर उठा न रखेंगे।

हम एक तीर से दो शिकार करेंगे। लायस के क़ातिल की गिरफ़्तारी और अपनी जिन्दगी की हिफ़ाज़त ! वो दग़ाबाज़ क़ातिल, हमें भी, अपना निशाना बना सकता है। देवता निगहबान रहें, हम ऐसा नहीं होने देंगे।

उठो बच्चो ! जाओ और अहल-ए-कैडमस को यहाँ लाओ। वो, क़ातिल की तलाश में, हमारी मदद करें। हमें यक़ीन है, कामयाबी या नाकामी, जो भी होगा, देवताओं की रज़ा से होगा।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

[इडिपस अन्दर चला जाता है। प्यामबर लोगों को बुलाने चला जाता है। राहब फरियादियों को जाने का इशारा करता है। थीब के मुअज़्ज़ीन का कोरस दाख़िल होता है।]

कोरस : आज थीब में रोशनी के इस शहर में, देवताओं की मुक़द्दस आवाज़ सुनायी दी है। मेरे दिल में हौल उठ रहा है। मेरे एहसास पर ख़ौफ़ का असर छा रहा है। न जाने क्या होनेवाला है? ऐ मुक़द्दस देवताओ! अब क्या होगा?

ऐ ज़िन्दा जावेद एथीना! ऐ ज़ीयस की नेक दुख़्तर! हम तुम्हें पुकार रहे हैं। ऐ इस सरज़मीन की मलिका आर्टिमस! ऐ फीबस! हमारे सरताज! हमें, फिर अपनी ताकत दिखाओ! हमें इस वबा के तबाहकुन असरात से, निजात दिलाओ। हमारी तकलीफ़ बयान से बाहर है। वबा भयानक साये की तरह, हमारी ज़िन्दगियों पर छा रही है और ज़िन्दगी की गर्मी आहिस्ता-आहिस्ता, मौत की तारीक ठण्डक में बदलती जा रही है।

शहर के बाज़ारों में, मौत वहशियों की तरह नाच रही है। मासूम बच्चे, अधखिली कलियों की तरह, मसले जा रहे हैं। माएँ दिल मसोसकर रह जाती हैं लेकिन आँसू खुश्क हो गये हैं। ऐ मुक़द्दस एथीना, हमारी फ़रियाद सुन! ऐ अपोलो, हमारी पुकार सुन! हमें इस मुसीबत से निजात दिला! ऐ ज़ीयस, उठने दे अब तूफ़ानों को, कड़कने दे बिजली को, और मार भगा मौत के इस भूत को! ऐ, सुनहरी कमानवाली डाईसियान! ऐ आर्टिमस! ऐ बैंकस! ऐ मसर्रत के देवता! आगे बढ़ो और अपनी रोशनी से, मौत के अँधेरों को, जला दो!

[इडिपस आता है।]

इडिपस : देवताओं के हुज़ूर में, आपकी दुआएँ ज़रूर सुनी जायेंगी। लायस के क़ातिल को, क़ैफ़र-ए-कर्दार तक पहुँचाने के लिए, आप मेरी मदद करें। मैं एक अजनबी हूँ। यहाँ के हालात का इल्म, लोगों की बातों तक ही, महदूद है। वो एक क़ातिल की गिरफ़्तारी के लिए, काफ़ी नहीं है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

एक नये शहरी के नाते, मैं थीब के लोगों के सामने, ऐलान करता हूँ---अगर कोई लेबडेकस के बेटे लायस के, क़ातिल हाथों को पहचानता है तो वो सामने आ जाये !

अगर किसी का ज़मीर गुनाह-आलूद है, वो अपने आपको, हमारे हवाले कर दे ! उसे कोई सख़्त सज़ा नहीं दी जायेगी। उसके जुर्म की संगीनी को, नज़रन्दाज़ करके, उसे जिलावतन करने पर ही इकतफ़ा क़िया जायेगा।

अगर किसी को, क़ातिल का इल्म हो तो वो हमें बता दे ! वो इनाम-ओ-इकराम का मुस्तहक़ समझा जायेगा और तमाम मुल्क उसका शुक्रगुज़ार होगा।

इडिपस : आप सब ख़ामोश हैं। लेकिन अगर कोई भी शख़्स मुजरिम साबित हुआ या जुर्म की पर्दापोशी करते हुए पाया गया; चाहे शहंशाह हो या गदागर--हम ऐलान करते हैं---हमारी दार-उल-सल्तनत में कोई भी शख़्स, उसको पनाह नहीं देगा। उसके साथ किसी किस्म का ताल्लुक नहीं रखेगा। उस शख्स को, देवताओं की पूजा करने या क़ुर्बानी की रस्मों में शरीक होने की, इज़ाज़त नहीं होगी। इस तरह, हम देवताओं के हुक्म की तामील करेंगे और मरहूम की जानिब, अपना फ़र्ज़ अदा करेंगे।

और हम देवताओं से दुआ करेंगे कि उस शर्मनाक क़ातिल और उसके साथियों की मौत, इन्तिहा ही अज़ीयतनाक़ हो। जो लोग अपना जुर्म कबूल करने से मुनकिर हैं---खुदा करे ! ये ज़मीन उनके लिए वीराना बन जाय ! उनकी औरतें, बाँझ हो जायें और इस मौजूदा तबाही से, ख़ौफ़नाक तबाही उन पर नाज़िल हो !

हम हैरान हैं, शहंशाह की मौत की तफ़तीश जैसे अहम मसले को, कैसे नज़रन्दाज किया गया ? खैर, जो हुआ सो हुआ, अब उनकी जगह पर हम हैं। उनकी मलिका, हमारी शरीक-ए-हयात हैं और किस्मत की सितमज़रीफ़ी देखिए, जिस शख़्स के साथ, बच्चों की पैदाइश की वजह से, हमारा खूनी रिश्ता भी कायम हुआ, उसी पर, ये तबाही नाज़िल हुई। लेबडेकस के बेटे, लायस के क़ातिल की तलाश, हम अपने वालिद मोहतरिम के क़ातिल की तलाश समझकर करेंगे।

कोरस : शहंशाह हुज़ूर गुस्ताख़ी मुआफ़ ! मैं आपको ये बता दूं कि मैं वो

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

शख़्स नहीं हूँ, जिसको आपने बददुआएँ दी हैं और ना ही मैं किसी ऐसे शख़्स को जानता हूँ। ये सवाल फ़ीबस से पूछा गया था और यक़ीनन, वो ही मुजरिम का नाम बता सकेंगे।

इडिपस : हम मानते हैं, लेकिन हम देवताओं को, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ बोलने पर मजबूर नहीं कर सकते।

कोरस : मैं कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ !

इडिपस : बिला ख़ौफ़-ओ-ख़तर कहो।

कोरस : लार्ड टायरेसियस, फ़ीबस के नज़दीकी हैं। मेरे ख्याल में, इस तलाश में, वो हमारी मदद कर सकते हैं।

इडिपस : हमने, इस बात को, नजरअन्दाज़ नहीं किया। क्रियान के मशविरे पर हमने उसे दो बार बुला भेजा है। हम हैरान हैं, वो अभी तक, क्यों नहीं आया ?

कोरस : मैंने कुछ अफ़वाहें सुनी थीं- --नहीं ! वो तो बूढ़ी औरतों के किस्से ही थे।

इडिपस : अफ़वाहें ! कैसी अफ़वाहें !! हमें भी तो उनका इल्म होना चाहिए।

कोरस : सुना था कि लायस दौरान-ए-सफ़र क़त्ल किया गया था।

इडिपस : हमने भी ऐसा ही सुना है। लेकिन सबूत----सबूत कहाँ है ?

कोरस : कौन ऐसा बेजिगर होगा, जो आपकी बददुआएँ सुनने के बाद भी, सामने आने की हिम्मत करेगा ?

इडिपस : जो इतना घिनौना काम करते हुए नहीं घबराया, क्या वो चन्द बेजान इल्फ़ाज से ख़ौफ़ज़दा हो जायेगा ?

कोरस : वो देखिए ! इल्हामी टायरेसियस आ रहा है। सदाकत की मुँह बोलती तसवीर। वो हमें क़ातिल का पता बता सकेगा।

[नाबीना टायरेसियस एक ख़ादिम के साथ आता है।]

इडिपस : टायरेसियस ! हम जानते हैं, दुनियाँ का कोई भी असरार तुमसे पोशीदा नहीं। जिस्मानी आँखों से ना सही, रूहानी आँखों से जरूर तुम इस शहर की हालत देख रहे हो। इस वक्त तुम ही इस भँवर से निकाल सकते हो।

तुम ! ये तो जानते ही हो, फ़ीबस ने कहा है कि इस तबाहकुन वबा से निजात का, एक ही रास्ता है, वो ये कि लायस के ख़ून का बदला ख़ून या उसके क़ातिल की जिलावत्नी।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

अपनी कुव्वतों को बनीनोह-ए-इन्सान की बहबूदी के लिए सर्फ़ करना, हर इन्सान का फ़र्ज-ए-अव्वलीन है। तुम भी अपने इल्म-ए-नजूम को, परिन्दों की परवाज को, पढ़ने के फ़न को और दूसरी पोशीदा कुव्वतों को, बरोएकार लाओ और अपने आपको, हमें और तमाम थीब को मौत के चंगुल से रिहा करो।

टायरेसियस : खूब कहा! लेकिन अक्ल-ए-इन्सानी जब बेफ़ायदा हो जाय, तो वो भी तकलीफ़देह हो जाती है। -- अरे···! मैं ये कैसे भूल गया कि अच्छी तरह कौन जानता है? मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था।

इडिपस : तुम हमें नाउम्मीद कर रहे हो बुजुर्गवार!

टायरेसियस : मुझे वापस जाने दें। हम दोनों को, अपने-अपने ग़मों का बोझ उठाने में आसानी होगी।

इडिपस : महोतरिम! इस इन्कार का मतलब होगा तुमको मादर-ए-वतन थीब से उलफत नहीं!

टायरेसियस : मैं देख रहा हूँ, इन बातों का अन्जाम अच्छा नहीं होगा। इसीलिए अपनी बात कहने से गुरेज कर रहा हूँ।

इडिपस : देवताओं की कसम! अगर तुम्हें किसी बात का इल्म है, तो बताने से इन्कार न करो। हम सब दरख़ास्त करते हैं।

टायरेसियस : आप सबको ग़लतफ़हमी हुई है, मैं आपके और अपने दिलों के पोशीदा राज, कभी जाहिर नहीं करूँगा।

इडिपस : राज जाहिर नहीं करूँगा? याने दीदा-दानिस्ता इस शहर को तबाह हो जाने दोगे?

टायरेसियस : मैं सिर्फ़ आपको बचाना चाहता हूँ, और खुद को भी। अब और कुछ मत पूछो। मैं बिल्कुल नहीं बताऊँगा।

इडिपस : देखो! तुम हमें बिला वजह गुस्सा दिला रहे हो।

टायरेसियस : मुझ पर इल्जाम मत धरो। पहले अपने गिरेबान में झाँककर देखो!

इडिपस : सुनो-सुनो! इस गुस्ताख़ की बातें। इनसे हम तो कुजा देवता भी तैश में आ जायें।

टायरेसियस : मैं अब कभी नहीं बोलूँगा। फिर भी किस्मत में जो लिखा है, वो होकर रहेगा।

इडिपस : क्या होकर रहेगा? बताओ! बताना तुम्हारा पेशा है।

टायरेसियस : आप कितने ही तैश में क्यों न आयें, मैं एक लफ़्ज नहीं कहूँगा!

इडिपस : लेकिन हम ये जरूर कहेंगे, इस क़त्ल की साजिश में, तुम्हारा भी हाथ था। बल्कि इस क़त्ल के जिम्मेदार, तुम ही हो और अगर तुम्हारी आँखें होतीं, तो हम बिलाख़तर ये कहते कि ये ग़लीज गुनाह

तुम्हारे ही हाथों से सरज़द हुआ था ।

टायरेसियस : तुम ऐसा करते ? तो सुनो ! इस सरज़मीन को नापाक करनेवाले वजूद तुम हो और तुम्हारे होंठों से निकली हुई बददुआएँ, तुम पर ही नाजिल होंगी ।

इडिपस : जानते हो ! इन अल्फ़ाज का अंजाम क्या होगा ?

टायरेसियस : सच्चाई मेरी मुहाफ़िज़ है । मुझे अंजाम की फ़िक्र नहीं ।

इडिपस : ये इल्म-ए-नजूम नहीं ! सरासर साजिश है । बताओ ! किसकी तहरीक है ये ?

टायरेसियस : तुमने ही मुझे ये सब कहने पर मजबूर किया है ।

इडिपस : एक बार फिर कहो !

टायरेसियस : जितना कहा, क्या वो काफ़ी नहीं है ?

इडिपस : नहीं, कोई शक-ओ-शुबा नहीं रहना चाहिए । एक बार फिर कहो ।

टायरेसियस : तो लो, एक बार फिर सुनो ! जिस क़ातिल को तुम तलाश कर रहे हो, वो तुम ही हो !

इडिपस : ये तुम दूसरी बार कह रहे हो । तुम्हें इन अल्फ़ाज के लिए पछताना पड़ेगा ।

टायरेसियस : अभी गुस्सा जनून की हद तक नहीं पहुँचा !

इडिपस : हाँ, अभी गुस्सा जनून की हद तक नहीं पहुँचा । कह दो, तुम सबकुछ कह दो ।

टायरेसियस : तुम अभी अँधेरे में हो । तुम नहीं जानते लेकिन मैं जानता हूँ, तुम एक गुनाह-आलूद जिन्दगी बसर कर रहे हो ।

इडिपस : क्या तुम्हें यक़ीन है ? इतना कुछ कह देने के बाद भी, तुम सजा से बच जाओगे ।

टायरेसियस : अगर सच्चाई में ताक़त है, तो मैं जरूर बच जाऊँगा ।

इडिपस : सच्चाई में ताक़त है । लेकिन तुम जैसे अहमक, बेहया, बेशरम के लिए नहीं !

टायरेसियस : ऐ काबिल-ए-रहम इन्सान ! एक दिन, ये सब, तुम्हारे लिए कहा जायेगा ।

इडिपस : जुल्मात के अंधेरों में रेंगनेवाले कीड़े, तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते और ना ही वो शख्स, जो दिन की रोशनी देखता है ।

टायरेसियस : तुम्हारी तनज्जली मेरे हाथों से नहीं बल्कि अपोलो के हाथों से होगी और यक़ीनन होगी ।

इडिपस : समझा ! तो ये काम क्रियान का है ।

टायरेसियस : नहीं, क्रियान भी नहीं, तुम बजात-ए-खुद अपने दुश्मन हो ।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

इडिपस : ओह ! क्या ये ज़रूरी है कि शाही ख़ानदान के अफ़राद एक दूसरे से हसद करें ? क्या हमारा बेहतरीन और क़ाबिल-ए-एतमाद दोस्त क्रियान, हम पर छुपकर वार कर रहा है ? क्या वो इस आँख के अन्धे और नाम के नैनसुख के साथ, साजिश में शरीक होकर, हमारे तख़्त पर क़ाबिज होना चाहता है ?

टायरेसियस से

उस वक्त तुम्हारा इल्म-ए-नजूम—तुम्हारी वो परिन्दों की परवाज़ से, तक़दीरों का हाल बताने की कारगर्दी कहाँ थी ? जब उस साहिरा की पहेलियों ने, सब पर आफ़त ढा रक्खी थी—जब वो जादूगरनी, इस शहर के ऊपर मौत का साया बनकर छायी हुई थी, उस वक्त तुमने क्यों नहीं, उन अक्ल-ए-इन्सानी से वईद पहेलियों का हल बताया ? क्यों इसलाफ़ ग़ज़ाफ़ करनेवाली जुबान पर ताले पड़े हुए थे।

फिर हम आये-- हम इडिपस—नासमझ इडिपस ! हमने इल्म-ए-नजूम से नहीं—ना ही परिन्दों के पर गिनकर, बल्कि अपनी अक्ल से, उस पहेली का हल दरयाफ्त किया और तुम हमसे ही छुटकारा हासिल करना चाहते हो, ताकि शहंशाह क्रियान के मोतमिद ख़ास कहला सको।

लेकिन तुम्हें और इस साज़िश के सरबराह को पछताना पड़ेगा—काश ! तुम बूढ़े न होते और हमारी सजा तुम्हें हालात की संगीनी से रूशनास करती !

कोरस : शहंशाह हुजूर ! आप इस वक्त गुस्से में हैं। ये बेवक्त का गुस्सा अच्छा नहीं।' हमें इस वक्त देवताओं के हुक्म की तामील की तरकीब सोचनी चाहिए !

टायरेसियस : मैं तुम्हारी शहंशाही से इन्कार नहीं करता लेकिन खुदावन्द-ए-ताला के हुजूर में, हम दोनों बराबर हैं। मैं तुम्हारा गुलाम नहीं, ना ही, क्रियान मेरा सरपरस्त है। मैं सिर्फ़ लोक्सिस का ख़िदमतगार हूँ। तुम मेरी नाबीनाई का मजाक उड़ाते हो, लेकिन तुम आँखें रखते हुए भी अपनी तबाही नहीं देख सकते। तुम्हारी आँखें हैं लेकिन तुम नहीं देखते कि तुम किसके साथ जिन्दगी गुजार रहे हो ? सुनो ! मैं बताता हूँ, तुम गुनाहगार हो, तुम नहीं जानते ! तुम्हारे माँ-बाप की बददुआएँ दुधारी तलवार की तरह काम कर रही हैं। वो तुम्हें इस सरज़मीन से उठाकर, बाहर फेंकेंगी। ये रोशनी से चमकती

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

हुई आँखें अँधेरों में डूब जायेंगी। जब तुम अपनी पुरमुसर्रत अजदवाजी जिन्दगी के बारे में जानोगे और जब तुम्हें मालूम होगा कि जो बच्चे, आज तुम्हें अपना वालिद समझते हैं, तुम उनके क्या हो, उस वक्त तुम चीख़ोगे ! चिल्लाओगे ! लेकिन कोई तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनेगा। तुम अभी इस तकलीफ़ का अन्दाज भी नहीं कर सकते। तुम आज मुझ पर और क्रियान पर इल्जाम लगा रहे हो, लेकिन याद रखो, एक दिन तुम तबाही और बर्बादी की अमीक़ गहराइयों में गिरोगे।

इडिपस : तुम हमारी कुव्वत-ए-बर्दाश्त की हदों से बढ़ रहे हो। चले जाओ ! दूर हो जाओ मेरी नज़रों से।

टायरेसियस : चला जाऊँगा। मैं खुद नहीं आया था। तुमने ही मुझे बुलाया था।

इडिपस : हमें इस बात का इल्म होता कि हमें एक पागल की बकवास सुननी पड़ेगी, तो हम हरगिज़ तुम्हें न बुलाते।

टायरेसियस : तुम मुझे पागल समझ रहे हो। लेकिन तुम्हारे वाल्देन तो ऐसा तसव्वुर तक नहीं करते।

इडिपस : क्या कहा, वाल्देन !

टायरेसियस : आज का दिन तुम्हारी ज़िन्दगी का दिन है··· और मौत का भी !

इडिपस : पहेलियाँ न बुझवाओ ! साफ़-साफ़ बात करो।

टायरेसियस : लेकिन तुम तो पहेलियाँ बूझने में अपना सानी नहीं रखते !

इडिपस : तुम मेरी अज़ीम ताक़त पर तन्ज़ कर रहे हो ?

टायरेसियस : वो तुम्हारी बदकिस्मती है और बर्बादी का बायस भी।

इडिपस : हमें इस बात की परवाह नहीं ! हमें इस बात का इत्मीनान है कि हमने इस मुल्क हो बर्बाद होने से बचाया।

टायरेसियस : ठीक है, मैं जाता हूँ। मुझे सहारा दो, मेरे अज़ीज़ ! मुझे घर ले चलो !

इडिपस : हम तुम्हारी बेचारगी पर तरस खाकर, तुम्हें माफ करते हैं— जाओ, इसको ले जाओ !

टायरेसियस : मैं तुम्हारी माफ़ी का तलबगार नहीं। मैं बिला ख़ौफ़-ओ-ख़तर सब-कुछ कह चुका हूँ और एक बार फिर कहूँगा कि जिस आदमी की तलाश में, तुम ज़मीन-ओ-आसमान एक करने की सोच रहे हो, वो यहीं पर मौजूद है। इस वक्त हम उसे एक अजनबी समझ रहे हैं, जो कुछ अर्से के लिए यहाँ आया हो, लेकिन वो थीब का ही बेटा निकलेगा। वो यहाँ चमकती हुई आँखें लेकर आया था लेकिन अँधेरों में डूबकर जायेगा। वो जो एक दौलतमन्द की शक्ल में आया था,

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

एक भिखारी की तरह डण्डा हाथ में लिये, अपना रास्ता टटोलते हुए जिलावत्नी की ज़िन्दगी बसर करने के लिए जायेगा। आप अभी देखेंगे, वो अपने ही बच्चों का भाई साबित होगा। अपनी ही माँ का ख़ाविन्द निकलेगा, और अपने ही वालिद का क़ातिल होगा। जाओ और जाकर सोचो! जब मुझे झूठा साबित कर सको, तभी मुझे अन्धा कहना।

[टायरेसियस जाता है, इडिपस भी जाता है।]

कोरस : डेल्फ़ी की चट्टानों में बसनेवाले देवताओं के मुँह से, क़ातिल के लिए लानतें बरस रही हैं---कौन है वो शख्स! तूफ़ानी घोड़ों पर बैठकर, इस जगह से फ़रार हो जाये, नहीं तो ज़ीयस की नूरानी ताक़तें, इसको जलाकर ख़ाक़ कर देंगी। बदकिस्मती उसको घेरे खड़ी है।

देवताओं की ऊँची और बर्फ़ीली पहाड़ियों से, एक रूपोश इन्सान की तलाश का हुक्म आया है। लेकिन वो कहाँ है? वो जंगलों की ख़ाक़ छान रहा हो, या ग़ारों में पनाह ले रहा हो, डेल्फ़ी से आनेवाली देवताओं की आवाज़ें, उसके कानों में गूँज रही हैं।

टायरेसियस ने बहुत ही ख़ौफ़नाक बातें की हैं। उन पर यक़ीन करने को जी नहीं चाहता, लेकिन इन्कार भी कैसे करें? एक अँधेरे की दीवार दरम्यान में हासल है। क्या कभी लेबडेकस के ख़ानदान और पोलिबस के बेटे में झगड़ा हुआ था, जिसकी वज़ह से इडिपस का नाम, इस मौत के सिलसिले में लिया जा रहा है?

ख़ैर, जब तक जुर्म साबित नहीं होता, मैं किसी को मुजरिम मानने को तैयार नहीं। इडिपस ने माफ़ूक-उल-फ़ितरत साहिरा का डटकर मुकाबिला किया। इस मुल्क को तबाही से बचाया तो मैं उसको कैसे बुरा समझूँ? ज़िन्दगी के तमाम पोशीदा असरार जीयस और अपोलो ही जानते हैं।

[क्रियान आता है।]

क्रियान : इस शहर के मुअज़्ज़िज़ बाशिन्दो! मुझे बताया गया है कि शहंशाह इडिपस ने मेरे ऊपर झूठा इल्ज़ाम लगाया है। मैं इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर वो ये समझता है कि मैंने इस

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

मुसीबत के वक्त में, उसको किसी भी तरह नुकसान पहुँचाने की कोशिश की है, तो देवता मुझे इसी वक्त मौत की गोद में सुला दें, क्योंकि ऐसी तोहमत लेकर जिन्दा रहना मुश्किल है और अगर आप लोग भी मुझे गद्दार समझने लगें, तो ये तोहमत से भी बढ़कर बात होगी।

कोरस : मेरे ख़याल में उन्होंने जो कुछ कहा, गुस्से की हालत में कहा है।

क्रियान : क्या उसने ये भी कहा है कि टायरेसियस ने मेरे दबाव में आकर झूठ बोला है?

कोरस : हाँ, लेकिन मैं नहीं जानता, उन्होंने ऐसा क्यों कहा?

क्रियान : तो, ये इल्ज़ाम जानबूझकर, मेरे ख़िलाफ़ लगाया गया है।

कोरस : अपने मालिक के कामों की तनक़ीद, मेरा काम नहीं। लीजिए, वो खुद ही आ रहे हैं।

[इडिपस आता है।]

इडिपस : कहिए जनाब! कैसे आना हुआ? मेरी जिन्दगी और मेरे तख़्त के ख़िलाफ़, साज़िश करने के बाद भी, मेरे सामने आने की हिम्मत हुई। तुमने हमें बुज़दिल समझा है या बेवकूफ़---साज़िश-- कितनी बचकाना साज़िश—बेयार-ओ-मददगार तख़्त छीनने चले थे लेकिन ये भूल गये सल्तनतें दौलत और इन्सानों के जोर पर जीती जाती हैं।

क्रियान : पहले मेरा जवाब सुन लो! फिर फ़ैसला करना!

इडिपस : तुम्हारे अल्फ़ाज़ की जादू-बयानी मुझ पर असरन्दाज़ नहीं होगी। मैं एक ही बात जानता हूँ, वो ये कि तुम मेरे सबसे बड़े दुश्मन हो।

क्रियान : पहले मेरी बात तो सुन लो!

इडिपस : जो जी में आये कहो लेकिन मैं झूठी ईमानदारी का गीत सुनने को तैयार नहीं।

क्रियान : क्या तुम ये समझते हो, तुम्हारा ये रवैया फ़ायदामन्द साबित होगा?

इडिपस : क्या तुम यह समझते हो कि शाही तख़्त के ख़िलाफ़ साज़िश करने के बाद भी, तुम बच निकलोगे?

क्रियान : मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूँ कि ऐसा समझूँ। लेकिन मुझे अपना जुर्म भी तो मालूम हो!

इडिपस : क्या तुमने इस दग़ाबाज, टायरेसियस को बुलाने के लिए, नहीं कहा था?

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

क्रियान : कहा था। और अब फिर कहूँगा।

इडिपस : कितना अर्सा हुआ जब लायस ने…?

क्रियान : लायस ने क्या—मैं समझा नहीं।

इडिपस : लायस की मौत को कितना अर्सा हुआ?

क्रियान : एक तवील अर्सा। अब तो मुझे उसकी याद भी नहीं।

इडिपस : क्या ये बूढ़ा नजूमी उस वक्त भी यही काम करता था?

क्रियान : हाँ, उस वक्त भी, इसकी इतनी इज्जत थी, जितनी अब है।

इडिपस : उन दिनों क्या इसने कभी मेरा नाम लिया था?

क्रियान : मैं नहीं जानता।

इडिपस : क्या इस मौत के बारे में जाँच-पड़ताल की गयी थी?

क्रियान : की थी, लेकिन बेफ़ायदा…।

इडिपस : टायरेसियस, उस वक्त क्यों खामोश था?

क्रियान : मुझे जितना इल्म है, उससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कह सकता।

इडिपस : एक बात तुम बखूबी जानते हो और तुम्हें तसलीम करने से इन्कार नहीं होगा?

क्रियान : जो बात मैं जानता हूँ, बखुशी कबूल करूँगा लेकिन जो नहीं जानता…?

इडिपस : तुम्हारी शह के बिना टायरेसियस में इतनी हिम्मत नहीं कि वो मुझे क़ातिल कहे!

क्रियान : ये तुम ही बेहतर जानते हो। लेकिन मुझे भी एक सवाल पूछने की इज़ाजत दो।

इडिपस : इज़ाजत है—लेकिन तुम हमें क़ातिल साबित नहीं कर सकते!

क्रियान : क्या मेरी हमशीरा तुम्हारी शरीके-ए-हयात है?

इडिपस : हाँ, हाँ, क्यों नहीं?

क्रियान : और वो ताज-ओ-तख़्त में भी बराबर की हक़दार है।

इडिपस : यक़ीनन!

क्रियान : क्या मैं, शाही रुतबे में, तीसरा बराबर का हक़दार नहीं?

इडिपस : यक़ीनन तुम बराबर के हक़दार हो। इसीलिए मुजरिम साबित होते हो।

क्रियान : लेकिन मैं मुजरिम नहीं हूँ। जरा सोचो, कौन ऐसा बेवकूफ़ होगा, जो शहंशाहों जैसी, पुरऐश जिन्दगी बसर करते हुए, तख़्त-ओ-ताज की जिम्मेदारियों में उलझने की कोशिश करेगा। नाम का शहंशाह बनने की ख़्वाहिश, मेरे दिल में कभी नहीं आयी और फिर इस वक्त तुम, मेरी तमाम जरूरियात पूरी करने के लिए मौजूद हो।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

अगर मैं शहंशाह होता---तमाम लोगों की फ़िक्र और परेशानियाँ मुझे थका देतीं। मैं भला काँटों का ताज पहनने की कोशिश क्यों करने लगा ? मैं जिस हाल में हूँ, उसी में खुश हूँ। मैं सबका दोस्त हूँ, और सब मेरे दोस्त हैं, जब भी किसी ने तुमसे मिलना होता है, वो मेरे पास आता है क्योंकि उन्हें यक़ीन है, मेरे पास आने से, उन्हें ज़रूर कामयाबी हासिल होगी। मैं उन लोगों का बेताज बादशाह हूँ। धोखा देना मेरा शेवा नहीं, और ना ही मेरे किसी दोस्त का !

अगर मेरी सच्चाई परखना चाहते हो, तो पहले पैथियन दरगाह से मालूम करो कि जो पैग़ाम मैं लाया था, वो ठीक है या नहीं और दूसरे किसी भी तरह टायरेसियस के साथ, मेरा ताल्लुक़ साबित करो, फिर चाहे तुम मुझे सज़ा-ए-मौत ही क्यों न दो, मैं बखुशी क़बूल करूँगा।

लेकिन मेरी ग़ैरहाजिरी में मुझ पर इल्ज़ाम---ये मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। एक बेगुनाह इन्सान को मुजरिम समझना और एक बुरे इन्सान को अच्छा समझना, बज़ात-ए-खुद एक संगीन जुर्म है। एक वफादार दोस्त को दुतकारना, अपनी ज़िन्दगी को दुतकारने के बराबर है। ये वक़्त ही बतायेगा कि सच्चाई क्या है और मुजरिम कौन है ?

कोरस : बजा फ़रमाया, आवारा ख़्यालात ज्यादा कारआमद नहीं होते।

इडिपस : लेकिन हम एक साज़िशी को, मक़रूह इरादों की तक़मील के लिए आज़ाद नहीं छोड़ सकते।

क्रियान : आख़िर तुम चाहते क्या हो ? मुझे जिलावत्न करोगे ?

इडिपस : नहीं ! तुम्हें सज़ा-ए-मौत दी जायेगी।

क्रियान : लेकिन मेरा जुर्म ?

इडिपस : मैं जानता हूँ, तुम मुजरिम हो।

क्रियान : तुम ग़ल्ती पर हो।

इडिपस : नहीं ! हम सही रास्ते पर हैं।

क्रियान : अपनी नज़रों में, मेरी नज़रों में नहीं !

इडिपस : तुम साज़िशी हो !

क्रियान : और अगर तुम ग़ल्ती पर हुए तो ?

इडिपस : शहंशाह को, बहरहाल हुकूमत करनी है।

क्रियान : लेकिन एक बेइन्साफ़ शहंशाह को हुकूमत करने का कोई हक़ नहीं।

इडिपस : मेरे शहर थीब के लोगो, सुनो, इसकी बकवास सुनो !

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

क्रियान : तुम्हारा शहर ? क्या ये मेरा शहर नहीं ?

कोरस : बस कीजिए मेरे मालिक ! मलिका योकास्टा आ रही हैं। शायद वो इस झगड़े का फ़ैसला कर सकें।

[योकास्टा दाख़िल होती है।]

योकास्टा : आप लोग क्यों झगड़ रहे हैं ? आपको इस बात का ज़रा भी एहसास नहीं, मुल्क इस वक्त मुसीबत में है और आप अपने जातीय झगड़ों में फँसे हुए हैं। मेरे सरताज ! आप अन्दर चलें। क्रियान ! तुम भी जाओ, क्यों छोटी-सी बात का बतंगड़ बना रहे हो ?

क्रियान : ये छोटी-सी बात नहीं, बहन ! तुम्हारा शौहर इडिपस मुझे सजा-ए-मौत दे रहा है।

इडिपस : इसने हमारे ख़िलाफ़ साजिश की है।

क्रियान : अगर मैंने ऐसा कुछ किया हो, तो देवता कसम; मुझे जिन्दगी-भर चैन नसीब न हो !

योकास्टा : मान भी जाओ, इडिपस ! खुदा के लिए मान जाओ ! उसकी क़सम पर यक़ीन करो।

कोरस : मान जाइए बन्दापरवर, आप ही मान जाइए !

इडिपस : कैसे यक़ीन कर लें कि वो मुजरिम नहीं है ?

कोरस : उसने आज तक आपके सामने झूठ नहीं बोला और फिर देवताओं की क़सम भी···।

इडिपस : जानते हो, किसकी सिफ़ारिश कर रहे हो ?

कोरस : हाँ, मैं जानता हूँ।

इडिपस : हमें यक़ीन नहीं आता।

कोरस : उसने दोस्ती की क़सम खायी है। चन्द बेमानी अल्फ़ाज़ के लिए, एक दोस्त को छोड़ देना, अच्छी बात नहीं !

इडिपस : तुम भूल रहे हो, उसकी रिहाई, हमारी मौत का वायस होगी !

कोरस : आप इस ख़याल को, दिल से निकाल दें, हुजूर ! इस वक्त जिस मुसीबत में हम गिरफ्तार हैं, उसकी फ़िक्र करें।

इडिपस : हम जानते हैं, हमारा अंजाम जिलावतनी या मौत होगा। फिर भी, हम उसे रिहा करते हैं। लेकिन हमने उसे दिल से माफ़ नहीं किया। हम उससे बेहद नफ़रत करते हैं।

क्रियान : बिला वजह गुस्सा और मजबूर होकर रहम करनेवाला इन्सान, मुश्किलात में ही पड़ता है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

इडिपस : चले जाओ यहाँ से !

क्रियान : जा रहा हूँ लेकिन ये मत भूलो ! तुम मेरे साथ नाइन्साफ़ी कर रहे हो।

[क्रियान जाता है।]

कोरस : आप ही शहंशाह को समझायें मलिका हुजूर !

योकास्टा : ये सब कैसे हुआ ?

कोरस : बेमतलब अन्दाज़ों और बेबुनियाद इल्ज़ामों से, ये झगड़ा शुरू हुआ।

योकास्टा : क्या दोनों एक-दूसरे को ही कसूरवार ठहरा रहे थे ?

कोरस : जी, हाँ।

योकास्टा : किस बात के लिए ?

कोरस : ये मत पूछिए, गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई फ़ायदा नहीं !

इडिपस : तुम आसानी से दुनियाँ-भर में, अमन का पैग़ाम पहुँचा सकते हो।

कोरस : हम पर यक़ीन कीजिए जहाँपनाह ! क्या हम बेवकूफ़ हैं, जो आपके मज़बूत बाजुओं के साया-ए-शफ़क़त से महरूम होने की कोशिश करेंगे, जबकि आपने हमें एक बार पहले भी जिन्दगी अता की थी और अब फिर हमें, मौत के मुंह से बचा लायेंगे ?

योकास्टा : मुझे भी तो कुछ मालूम हो ? क्रियान के लिए, इतनी नफ़रत किस-लिए ?

इडिपस : हम बतायेंगे, अपनी अजीज़ मलिका को हम खुद बतायेंगे। कसूर सरासर क्रियान का है। वो हमारे ख़िलाफ़, साजिश कर रहा था।

योकास्टा : साजिश कर रहा था ? कैसी साजिश !

इडिपस : वो हमें लायस का क़ातिल गरदान रहा है।

योकास्टा : ये उसकी अपनी राय है या किसी और के कहने पर ?

इडिपस : यही तो उसकी चालाकी है। उसने एक बददिमाग़ इल्हामी को अपना आलाकार बना रखा है।

योकास्टा : बस इतनी-सी बात थी ? आप भी ख़ामख़ा की फ़िक्र ले बैठे ! वो तो क्या, कोई भी देवताओं के असरार नहीं जान सकता। इस बात का जिन्दा सबूत मेरे पास है।

आप नहीं जानते; फ़ीबस के देवताओं ने और लायस के अपने सलाहकारों ने, पेशीनगोई की थी कि उसकी मौत अपने बेटे के हाथों होगी -- उसके और मेरे बेटे के हाथों ! लेकिन उस पेशीनगोई का क्या हुआ ? सब जानते हैं, लायस को चन्द लुटेरों ने वहाँ क़त्ल

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

किया था, जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं—और बच्चा ? वो अभी तीन दिन का भी नहीं था, जब उसके पाँव में बेड़ी डालकर, नंगी पहाड़ियों पर मरने के लिए भिजवा दिया था।

अपोलो ने भी, ऐसा नहीं सोचा था। उस बच्चे ने तो अपने वालिद को, मौत के घाट नहीं उतारा, ना ही लायस अपने बेटे के हाथों मारा गया। ये पेशीनगोई करनेवाले, ऐसे ही बढ़-हाँकते हैं। आप उनकी परवाह मत कीजिए ! वक्त आने पर सच्चाई जाहिर हो जायेगी।

इडिपस : अज़ीज़-ए-मन ! तुम्हारी बातों से मुझे फ़िक्र लाहक़ हो गया है। मेरे दिल में हौल उठ रहा है।

योकास्टा : क्या हुआ जहाँपनाह !

इडिपस : तुमने ये कहा ना, जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं, वहीं पर लायस का क़त्ल हुआ था !

योकास्टा : सुना तो ऐसा ही था !

इडिपस : कहाँ पर ? किस मुल्क़ में ?

योकास्टा : फ़ोसिस की सरज़मीन पर, जहाँ से डेल्फ़ी और डौलिया के लिए रास्ते निकलते हैं।

इडिपस : कितना अर्सा हुआ ?

योकास्टा : आपकी आमद से कुछ अर्सा पहले ही, हमें इस वारदात का इल्म हुआ था।

इडिपस : या खुदा···ये सब क्या हो रहा है ?

योकास्टा : इडिपस, मेरे सरताज आप परेशान क्यों हैं ?

इडिपस : ओह! मत पूछो। कुछ मत पूछो ! मुझे बताओ ! लायस कैसा आदमी था ? कितनी उम्र थी उसकी ?

योकास्टा : उनके बाल चाँदी की तरह सफ़ेद और···और आप जैसे ही वजीह इन्सान थे।

इडिपस : ओह, बदनसीब ! क्या अनजाने में मैंने अपने आपको ही बददुआएँ दी हैं।

योकास्टा : ये क्या, मेरे सरताज ! आप तो मुझे डरा रहे हैं।

इडिपस : क्या उस इल्हामी की आँखें थीं ? क्या ये मुमकिन है ? ठहरो ! मेरे यक़ीन के लिए एक बात और बताओ !

योकास्टा : एक अनजाना खौफ मेरे अहसास पर छा रहा है। फिर भी मुझे जो मालूम है, वो सब बताऊँगी।

इडिपस : लायस के साथ सिर्फ़ चन्द आदमी थे या पूरा हिफ़ाजती दस्ता था ?

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

योकास्टा : उनके साथ सिर्फ़ पाँच आदमी थे और एक ही गाड़ी थी। एक सरदार अगवानी कर रहा था।

इडिपस : आह ! अब शक़ की कोई गुंजाइश नहीं। तुम्हें ये सब किसने बताया था ?

योकास्टा : एक गुलाम ने, जो बचकर आ गया था।

इडिपस : क्या वो अब भी महल में है ?

योकास्टा : नहीं। जब वो वापस आया और आपको मरहूम शहंशाह के तख़्त पर देखा, तो उसने गिड़गिड़ाकर मुझसे कहा कि उसे शहर की आँखों से दूर, देहात में एक गड़रिये की ज़िन्दगी बसर करने की इजाजत दी जाय। मैंने उसे इजाजत दे दी।...बेचारा ! अगर वो इससे बड़ी माँग भी करता, तो मैं उसे ज़रूर पूरा करती, वो एक अच्छा गुलाम था।

इडिपस : क्या उसको यहाँ बुलाया जा सकता है ?

योकास्टा : हाँ, बुला सकते हैं। लेकिन आप उसे क्यों पूछ रहे हैं ?

इडिपस : जानेमन, मुझे डर है, मैंने बहुत कुछ कह दिया। अब मैं जल्द उस आदमी को देखना चाहता हूँ।

योकास्टा : मैं, अभी उसे बुलवाती हूँ। उसके आने तक क्या आप अपनी परेशानी की वजह नहीं बतायेंगे ?

इडिपस : वाक़यात की जो कड़ियाँ, मेरे ज़हन में उभर रही हैं, उनको मद्दे नज़र रखते हुए, अपनी ज़िन्दगी के हालात तुम्हें सुनाना, मेरे लिए लाज़िम हो गया है।

मेरे वालिद पोलिबस कोरिन्थियन थे और वालिदा मेरोपे डोरियन थीं। मेरी परवरिश बहुत अच्छे ढंग से हुई। लेकिन एक दिन अजीब-सी वारदात हुई या शायद मैंने ही, उस वाक़ये को जरूरत से ज्यादा अहमियत दी। वाक़या ये था...एक रोज मैं चन्द दोस्तों के साथ शग़ल-ए-मैनोशी में मसरूफ़ था। शराब के नशे में धुत्त एक दोस्त ने कहा कि मैं पोलिबस का बेटा नहीं हूँ। इस बात से मेरे दिल को बहुत सदमा पहुँचा लेकिन मैं बर्दाश्त कर गया। अगले रोज मैं अपने वाल्देन के पास गया और उनसे हक़ीक़त दरियाफ्त की। ये बात सुनकर, वो बहुत बरहम हुए। उन्होंने कहा, किसकी मजाल जो ऐसे बेबुनियाद क़िस्से कहता फिरे...मेरे दिल को कदरे-सकून नसीब हुआ। लेकिन फिर भी एक ख़लिश-सी दिल में बाक़ी रही और ये बात जंगल की आग की तरह फैल गयी।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

मैं अपने वाल्देन को बताये बिना ही पाइथो गया लेकिन बहुत नाउम्मीद होकर वापिस आया। मुझे अपने सवालों के जवाब की बजाय, एक-ख़ौफ़नाक और तकलीफ़देह क़िस्सा सुनना पड़ा कि कैसे मैं अपनी वालिदा से शादी करूँगा और कैसे अपने वालिद को मौत के घाट उतारूँगा! मैंने ये पक्का फ़ैसला कर लिया कि मैं कोई ऐसी वारदात नहीं होने दूंगा और मैं कोरियन्थ से फ़रार हो गया।

ग़रदिश-ए-आफ़ाक़ मुझे उस जगह ले आयी, जहाँ लायस की ज़िन्दगी मौत के आग़ोश में सो गयी।

मैं सच कह रहा हूँ, योकास्टा! जब मैं उस जगह पहुँचा, जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं, मैंने एक सरदार को देखा, जिसके पीछे एक घोड़ा-गाड़ी थी। जिसमें उसी शक्ल-ओ-शबाहत का इन्सान बैठा था जिसका ज़िक्र तुमने किया था। रहनुमा ने बहुत बदतमीज़ी से मुझे रास्ता छोड़ने के लिए कहा और उसके मालिक ने भी तौहीनआमेज़-अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये। गाड़ीवान ने मुझे एक तरफ़ धकेला। मैंने गुस्से में उसे मार गिराया। उसका बूढ़ा मालिक, पैनी नज़रों से घूरता रहा और जब मैं उसके पास से गुज़रा, उसने गाड़ीवान से हथियार लेकर मुझ पर वार किया, लेकिन उससे पहले ही मैंने डण्डे का एक भरपूर हाथ मारा। वो बेजान होकर, सर के बल गाड़ी से बाहर आ गिरा। गुस्से की शिद्दत से, मैंने उसके बाक़ी साथियों को भी, मौत के घाट उतार दिया।

अगर उस मक़तूल अजनबी की रगों में बहनेवाला खून, लायस का था तो मुझसे बदनसीब इन्सान दुनियाँ में कौन होगा? वो मैं ही होऊँगा सिर्फ़ मैं, जिसे कोई शख़्स पनाह नहीं देगा। कोई शख़्स नाम-ओ-पयाम नहीं करेगा और अपनी ही दी हुई बददुआएँ मुझ पर ही नाज़िल होंगी। मेरे ही नापाक़ हाथों ने, उसकी शरीक-ए-हयात को छुआ। ये हाथ गुनाहगार हैं! मैं गुनाहगार हूँ। मेरा पूरा वजूद गुनाहगार है।

मैं अपने घर से दूर, वाल्देन से दूर—मुल्क की सरज़मीन से दूर चला आया, ताकि ज़िन्दगी अता करनेवाली वालिदा को, बीवी न बना सकूँ और अपने वालिद मोहतरिम पोलिबस के खून से अपने हाथ न रँगूँ···ओह!···कौन है? वो ज़ालिम देवता! जिसने मेरी ऐसी तक़दीर लिखी है। ऐ आसमानी ताक़तो! मेरी ज़िन्दगी में ऐसा दिन आने से पहले ही मुझे, सफ़ा-ए-हस्ती से मिटा दो।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

कोरस : शहंशाह हुजूर, आपके अल्फ़ाज बहुत भयानक हैं। लेकिन आपको गवाह के मुँह से, सच्चाई सुनने से पहले ही, नाउम्मीद न होना चाहिए।

इडिपस : अब एक ही सहारा रह गया है, गड़रिये का इन्तज़ार !

योकास्टा : वो कैसे आपकी मदद कर सकता है ?

इडिपस : अगर उसका बयान, तुम्हारी कहानी के मुताबिक हुआ, तो हम इल्जाम से बरी हो जायेंगे।

योकास्टा : कैसा बयान ? मैंने क्या कहा था ?

इडिपस : लुटेरों ने---लुटेरों ने उसका क़त्ल किया था। अगर अब भी उसने यही कहा कि लुटेरों ने लायस का क़त्ल किया था, तब मैंने क़त्ल नहीं किया क्योंकि एक इन्सान अनेक नहीं हो सकता। लेकिन उसने अगर एक राहगीर का ज़िक्र किया तो···तो मेरे बचाव की कोई राह नहीं रह जायेगी। वो इशारा मेरी ही जानिब होगा !

योकास्टा : ओह ! लेकिन उसने यही कहा था, तमाम शहर के सामने, उसने कहा था। वो इन्कार नहीं कर सकता। अगर वो अपना बयान बदल भी दे तो भी, वो ये नहीं कह सकता कि लायस की मौत पेशीनगोई के मुताबिक हुई, क्योंकि लोक्सिस ने कहा था कि मेरी कोख़ से ज़िन्दगी पानेवाला बच्चा, उसको क़तल करेगा। मेरे बच्चे ने तो उस पर हाथ नहीं उठाया। वो फिर भी मर चुका है। लानत है रूहानी ताक़तों पर, अब मैं कभी उन पर एतबार नहीं करूँगी।

इडिपस : तुम ठीक कहती हो ! फिर भी मैं उस गड़रिये से जरूर मिलूँगा। उसको बुलाने का इन्तजाम किया जाये !

योकास्टा : आप अन्दर तशरीफ़ ले चलें, जैसा आप कहेंगे, वैसा ही होगा।

[दोनों अन्दर जाते हैं]

कोरस : मैं ऐसी ज़िन्दगी चाहता हूँ, जो हमारे एतक़ाद को न डगमगाये। वो एतक़ाद ! जो कभी न सोनेवाले---इन्सानी जिन्दगी से दूर---सदा-बहार देवताओं में है, जो आसमानों पर सफ़र करते हैं।

ग़रूर ज़ालिम इन्सान का हथियार-ए-ख़ास होता है। लेकिन ये ग़रूर आसमान जैसी बुलन्दियों से, जल्द ही तबाही की गहराइयों में आ गिरता है।

लेकिन लगन, नसल-ए-इन्सानी की बहबूदी की लगन, काबिल-ए-सताइश है। देवता निगहबान, ये दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की करे।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

जो शख़्स झूठे गरूर में, सच्चाई का रास्ता छोड़कर चलेगा, क्या वो अपने गरूर की सजा से बच सकता है? क्या उसको कोई हथियार नेक-ओ-बद का फ़ैसला करनेवाले, देवताओं के गुस्से से बचा सकता है?

जो शख़्स बुराई की ख़ातिर भलाई को कुर्बान कर सकता है, क्या वो देवताओं के इताब से बच सकता है?

अगर देवताओं के फ़र्मान पर, इन्सान का एतक़ाद नहीं रहा, अगर मुकद्दस पेशीनगोइयाँ बेअसर हो गयी हैं, तो बेहतर है मुक़द्दस दरगाहें बन्द हो जायें। देवताओं की अज़मत के गीत ख़ामोश हो जायें।

जीयस! मेरे महबूब, अपना ज़लाल दिखा। लोग अपोलो की अजमत से मुनकिर हो रहे हैं। भलाई, सफ़ा-ए-हस्ती से मिटती जा रही है।

[योकास्टा पूजा का सामान लेकर दाख़िल होती है।]

योकास्टा : ऐ, अजीम देवताओ! मुक़द्दस दरगाहों की ज़ियारत के लिए, मेरा जी चाह रहा है। मैं ये दुआ की निशानियाँ लिये, हाज़िर हुई हूँ। हमारे शहंशाह को, बेबुनियाद ख़यालात ने परेशान कर रखा है। हाल और माजी की बातों का, ढंग से तजज़िया नहीं कर पा रहे। हर नयी बात, उनकी परेशानी बढ़ा रही है। मैं उनकी दिलजोई करने में नाकाम रही हूँ। ऐ रौशन-ख़याल अपोलो! मेरा सर तेरे सजदे में है। हमको इस मुसीबत से निजात दिलाओ। अपने सरताज की परेशानी देखकर, मेरा दिल घबरा रहा है।

कुर्बानगाह पर पूजा करती है।

[कोरिन्थ का प्याम्बर आता है]

प्याम्बर : अजनबी लोगो! बुरा न मानें तो मुझे इडिपस के घर का पता बता दें या उससे मुलाकात करा दें, मैं उसकी तलाश में आया हूँ।

कोरस : आप इस वक़्त इडिपस के महल के सामने ही खड़े हैं, जनाब! वो इस वक़्त अन्दर हैं और ये खातून उनके बच्चों की माँ है, उनकी शरीक-ए-हयात है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

प्याम्बर : देवता निगहबान हों ! ऐसी खुश-सलीका बीबी पानेवाला इन्सान, बहुत खुशकिस्मत होगा।

योकास्टा : आप पर भी देवताओं का साया रहे, बुजुर्गवार ! आप कोई दरख़ास्त लेकर आये हैं या पैग़ाम ?

प्याम्बर : मैं आपके ख़ाविन्द के लिए, एक खुशखबरी लाया हूँ मोहतरिमा !

योकास्टा : कैसी खुशखबरी ! आप कहाँ से आये हैं ?

प्याम्बर : मैं कोरिन्थ से आया हूँ। ये ख़बर सुनकर, आपको थोड़ा-सा दुख तो होगा, लेकिन आप खुशी से फूली भी नहीं समायेंगी।

योकास्टा : ऐसी कौन-सी ख़बर है, जो हमें एक ही वक्त में ग़म और खुशी दोनों का एहसास करायेगी।

प्याम्बर : हम लोगों ने उनको इस्थमस का शहंशाह बनाने का फ़ैसला किया है।

योकास्टा : क्या पोलिबस अब शहंशाह नहीं रहे ? irony Good News of Death

प्याम्बर : पोलिबस वफ़ात पा गये हैं।

योकास्टा : क्या कहा ! वफ़ात पा गये ? इडिपस के वालिद वफ़ात पा गये ?

प्याम्बर : हाँ, मोहतरिमा।

योकास्टा : ऐ कनीज़ ! जाओ, अपने मालिक को ये खबर सुनाओ ! extreme

कहाँ हैं वो रूहानी ताक़तें, वो अल्हाम करनेवाली ताक़तें, देखें आकर ! इडिपस आज तक जिस शख़्स से दूर भागता रहा, ताकि कहीं उसे क़त्ल न कर दे, वो शख़्स वफ़ात पा गया है। सुनो वो इडिपस के हाथों क़त्ल नहीं हुआ; बल्कि खुद-ब-खुद मौत की आग़ोश में जा सोया है।

[इडिपस आता है]

इडिपस : जानेमन योकास्टा ने, हमें क्यों याद किया ?

योकास्टा : मेरे सरताज ! इसकी ख़बर तो सुनिए और फिर बताइए कहाँ गयी वो देवताओं की मुक़द्दस बातें !

इडिपस : कौन है ये शख़्स ? कैसी ख़बर लाया है ?

योकास्टा : ये कोरिन्थ से आया है। आपके वालिद मोहतरिम पोलिबस वफ़ात पा गये। सुना आपने, वफ़ात पा गये !

इडिपस : क्या कहा ! आप ही बतायें बुजुर्गवार !

प्याम्बर : ये हक़ीक़त है जनाब। आपके वालिद दार-ए-फ़ानी से कूच कर गये हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

इडिपस : उनकी मौत किसी बीमारी से हुई या किसी दग़ाबाज ने···?

प्याम्बर : मामूली-सी बीमारी, जो इन्सान को बुढ़ापे की मुसीबतों से, छुटकारा दिला देती है।

इडिपस : आपका मतलब है, बीमारी से उनकी मौत हुई?

प्याम्बर : जी हाँ! उनकी जिन्दगी का मक़सद पूरा हो चुका था।

इडिपस : खूब! बहुत खूब! अब कहो, जानेमन, कहाँ हैं? देवताओं की आवाजें? कहाँ हैं? क़िस्मत का हाल बतानेवाले परिन्दे, जो हमारी तक़दीर बनकर, हमारे सरों पर मँडलाते हैं। हमने तो अपने वालिद मोहतरिम की जान लेनी थी—हमने हथियार भी नहीं छुआ और वो अबदी नींद सो रहे हैं —हाँ---अगर हमारी जुदाई का ग़म उनकी मौत का बायस हो, तो हम जरूर क़सूरवार हैं। लेकिन नहीं, के अल्फाज झूठे निकले। उसकी पेशीनगोइयाँ वालिद मोहतारम पोलिबस की तरह मुर्दा हैं, जमीन में दफ्न हैं।

योकास्टा : मैं भी तो यही कहती थी!

इडिपस : आप तो कहती रहीं, हम ही बेबुनियाद ख़ौफ़ में मुबतला रहे।

योकास्टा : छोड़िए--अब सपने में भी ऐसे ख़यालात न लाइये!

इडिपस : अभी एक बात का ख़ौफ़ है···हमारी वालिदा!

योकास्टा : ख़ौफ़! कैसा ख़ौफ़! इडिपस जैसे इन्सान को ख़ौफ़ से क्या काम! हमारी जिन्दगी हादसात का मजमूआ है। कौन जाने कल क्या हो जाये? फिर क्यों ग़म को पास फटकने दिया जाये! क्यों न हँसी-खुशी ज़िन्दगी के शब-ओ-रोज़ गुज़ारे जायें। क्यों बिला वजह ख़ौफ़ को, ज़िन्दगी पर छाने का मौक़ा दिया जाये। जिन्दगी की रंगीनि[illegible] से लुत्फ़न्दोज़ होना है तो ऐसी बातें भूलनी ही पड़ेंगी।

इडिपस : अगर वो ज़िन्दा न होतीं, हम आपकी बात मान लेते। लेकिन ज[illegible] तक वो रू-ब-रूह-ए-सेहत हैं, हम ख़दशात से नहीं बच सकते।

योकास्टा : अपने वालिद की मौत से तो आपको कुछ सकून मिला था!

इडिपस : हाँ! सकून मिला था। लेकिन वालिदा की हयात, हमारे सकून[illegible] दरहम-बरहम करती रहेगी।

प्याम्बर : माफ़ कीजिए जनाब! आपको किस ख़ातून से ख़तरा है?

इडिपस : मलिका मेरोपे से—पोलिबस की जोजा से!

प्याम्बर : वो! वो, आपकी जिन्दगी के लिए, कैसे ख़तरा बन सकती हैं?

इडिपस : हमारे मुतल्लिक एक ख़ौफ़नाक पेशीनगोई की गयी थी।

प्याम्बर : एक अजनबी के तजस्सुस को गुस्ताख़ी न समझें तो क्या आप [illegible] सिलसिले में कुछ अर्ज करेंगे?

इडिपस : हम बखुशी बयान करेंगे --देवताओं का कहना था कि हम अपने हाथ, अपने वालिद मोहतरिम के खून से रंगेंगे और अपनी वालिदा को शरीक-ए-हयात बनायेंगे। यही वजह थी, हम कोरिन्थ से जिलावत्नी की जिन्दगी बसर कर रहे थे। हमें खुशी है, हम उस पेशीनगोई को झुठला सके, हालाँकि इतने शफ़ीक वाल्देन के बिछुड़ने का ग़म भी कम नहीं !

प्याम्बर : बस ! इसी ख़ौफ़ से आप जिलावत्नी की जिन्दगी बसर कर रहे थे !

इडिपस : हम देवताओं की पेशीनगोई को झुठलाना चाहते थे !

प्याम्बर : इजाज़त हो, तो मैं आपको, इस फ़िक्र से भी निजात दिलाऊँ। मैं आपके लिए, मुसर्रतों का प्याम्बर बनकर आया हूँ।

इडिपस : बखुदा हम तह-ए-दिल से आपके शुक्रगुजार होंगे।

प्याम्बर : हक़ीक़त जानने पर जब आप वतन लौटेंगे, उस वक्त मेरी भी भलाई होगी।

इडिपस : वतन, हम वतन कभी वापिस नहीं जायेंगे !

प्याम्बर : मेरे अजीज़ ! आपको धोखा हुआ है।

इडिपस : धोखा ! कैसा धोखा ?

प्याम्बर : आपका ये ख़ौफ़ बेबुनियाद है। But actually

इडिपस : मुमकिन है फीबस के अल्फ़ाज़ सच्चे हो जायें।

प्याम्बर : कैसे अल्फ़ाज़ ! अपने वालिद को क़त्ल करने और वालिदा से शादी करनेवाली कहानी का जिक्र कर रहे हैं।

इडिपस : जी ! उसी कहानी का, जिसने मेरी रातों की नींद हराम कर रखी है।

प्याम्बर : मैं वसीक से कहता हूँ, जनाव ! आपके तमाम ख़दशात बेबुनियाद हैं।

इडिपस : अगर मैं उनका फ़र्जन्द हूँ तो ये ख़दशात बेबुनियाद कैसे हो सकते हैं ?

प्याम्बर : पोलिबस से आपका कोई रिश्ता नहीं है, जनाब !

इडिपस : कोई रिश्ता नहीं ? मैं उनका बेटा नहीं ?

प्याम्बर : माफ़ कीजिए ! अगर आप मेरे बेटे नहीं तो उनके भी नहीं हैं।

इडिपस : जानते हैं, आप क्या कह रहे हैं ?

प्याम्बर : यही कि जैसे मैं आपका वालिद नहीं, वैसे ही पोलिबस भी, आपके वालिद नहीं हैं।

इडिपस : हमें उनका लख़्त-ए-जिगर क्यों कहा जाता था ?

प्याम्बर : मैं बताता हूँ। मैंने ही आपको उनके हवाले किया था।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

इडिपस : हवाले किया था ? फिर भी वो मुझे अपनी जान से अज़ीज़ रखते थे ?

प्याम्बर : उनकी और कोई औलाद न थी।

इडिपस : मैं···कहीं पड़ा हुआ मिला था या मुझे ख़रीदा गया था ?

प्याम्बर : आप किथरोन के वीरान जंगलों में पाये गये थे।

इडिपस : आप वहाँ कैसे पहुँचे थे ?

प्याम्बर : मैं पहाड़ पर भेड़ें चरा रहा था।

इडिपस : आप उस वक़्त गड़रिये का काम करते थे ?

प्याम्बर : हाँ, मैं गड़रिया था और खुशकिस्मती से, आपकी ज़िन्दगी बचानेवाला भी।

इडिपस : क्या मैं दर्द-ओ-करब से तड़प रहा था या मेरी ज़िन्दगी ख़तरे में थी, मैं किस हाल में था ?

प्याम्बर : आपके पाँव में पड़े हुए निशान, इस बात की गवाही हैं।

इडिपस : ओह ! क्या इनका जिक्र ज़रूरी है ?

प्याम्बर : आपके पाँव बेड़ियों में जकड़े हुए थे। मैंने आपको आज़ाद किया था।

इडिपस : सच है रोज़-ए-अव़्वल से ही, ये धब्बा हमारे साथ है।

प्याम्बर : इसके साथ ही आपके वाल्देन का नाम बावस्ता है।

इडिपस : या खुदा···ये किसका काम था !

प्याम्बर : उससे पूछिए, जो आपको मेरे पास लाया था।

इडिपस : आपके पास लाया था ! क्या मैं आपको नहीं मिला था ?

प्याम्बर : एक और गड़रिया आपको मेरी हिफ़ाज़त में छोड़ गया था।

इडिपस : कौन था वो ! आप बता सकते हैं वो कौन था ?

प्याम्बर : वो शायद लायस का आदमी था !

इडिपस : लायस ? हमारे मरहूम शहंशाह ?

प्याम्बर : हाँ, जनाब ! वो शहंशाह लायस का ही नमकख़्वार था।

इडिपस : क्या वो ज़िन्दा है ? क्या हम उसे देख सकते हैं ?

प्याम्बर : यहाँ के लोग बेहतर जानते होंगे।

इडिपस : आपमें कोई है, जिसने उस गड़रिये को देखा हो, जिसका जिक्र ये कर रहे हैं ? अगर उसे कहीं भी देखा हो—खेतों में, बागानों में या शहर की फ़सील के अन्दर, हमें बता दो।

अब इस असरार से पर्दा उठने ही वाला है।

कोरस : मेरे खयाल में, ये चरवाहा और वो देहाती, एक ही शख्स हैं, जिसको आपने पहले ही बुला भेजा है। मलिका आलिया ही उसकी निशान-

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

देही कर सकेंगी।

इडिपस : मेरी मलिका ! आप आनेवाले शख़्स को जानती हैं। बताइए ! क्या ये भी उसी का जिक्र कर रहे हैं ?

योकास्टा : इस बात से क्या फ़र्क पड़ता है कि ये किसका जिक्र कर रहे हैं ? कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जो कुछ इसने कहा है, आप भूल जाइए। अब कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

इडिपस : वाहियात—हम इन वाक़यात की ज़ंजीर की आख़िरी कड़ी तक देखेंगे, जब तक कि हमारी पैदाइश का राज़ ज़ाहिर न हो जाये।

योकास्टा : नहीं ! खुदा के लिए बन्द कीजिए इस तलाश को। अगर आप जिन्दा रहना चाहते हैं तो हालात यहीं पर छोड़ने होंगे। ओह— पहले ही मुसीबतें काफ़ी नहीं थीं क्या ?

इडिपस : घबराओ नहीं ! मैं चाहे तीन पुश्तों से, गुलामों के नीच ख़ानदान का फ़र्द साबित होऊँ, तुम्हारे ऊँचे खानदान पर, कोई हर्फ़ नहीं आयेगा।

योकास्टा : फिर भी, मैं आपसे इल्तज़ा करती हूँ, आप इस ख़याल को छोड़ दें।

इडिपस : नहीं। मैं सदाक़त जानना चाहता हूँ।

योकास्टा : मैं आपके भले के लिए ही कह रही हूँ।

इडिपस : बहुत अर्से तक मैं भलाई और नेकनामी से डरता रहा; अब नहीं।

योकास्टा : बदकिस्मत इन्सान ! खुदा करे, तुम सच्चाई जानने के लिए, जिन्दा न रहो !

इडिपस : जाओ, उस गड़रिये को बुलाकर लाओ और इस औरत को, अपने ख़ानदान की नेकनामी पर फख्र करने दो।

योकास्टा : ओ, भटके हुए बदनसीब इन्सान ! मत भूलना, तुम्हारे लिए, मेरे ये आख़िरी अल्फ़ाज़ !

जाती है

कोरस : मलिका-ए-आलिया इतनी जज़बाती होकर क्यों गयी हैं हुजूर ! मुझे डर है, किसी ख़ौफ़नाक वाकये ने ही, उन्हें चुप रहने पर मजबूर किया है।

इडिपस : कितना ही ख़ौफ़नाक और घिनौना वाकया क्यों न हो, हमें परवाह नहीं ! हम अपनी पैदाइश के राज़ को ज़रूर बेनकाब करेंगे। वो औरत ऐहसास-ए-बर्तरी से, हमारी नीच पैदाइश पर शर्मिन्दगी महसूस कर रही है। लेकिन हम किस्मत के बेटे हैं, हम शर्मिन्दा नहीं होंगे। तकदीर हमारी माँ है, बदलते हुए मौसम, हमारे हम-जोली, उनके उतार-चढ़ाव हमारी जिन्दगी से जेर-ओ-बम हैं लेकिन हम ये ज़रूर जानेंगे कि हम कौन हैं ?

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

कोरस : अगर मेरे अन्दाजे गलत नहीं तो कल का चाँद हमारे मालिक की पैदाइश के राज से, वाकिफ़ हो चुका होगा। वादि-ए-किथरौन की ताजीम के गीत, हमारे लबों पर होंगे क्योंकि वो ही हमारे मालिक की माँ-दाई और हमजोली थी !

क्या इडिपस किसी आसमानी रूह की औलाद है, जो किसी पहाड़ी दोशीज़ा की मुहब्बत में गिरफ्तार हुई थी ? क्या वो देवताओं की ही औलाद है ? क्या डायोनिसस के दस्त-ए-मुबारिक ने, उसे जिन्दगी बख्शी थी ? क्या वो किसी आसमानी हूर के बत्न से पैदा हुआ है ? हक़ीक़त जो भी हो, अभी मन्ज़र-ए-आम पर आ जायेगी।

इडिपस : मोहतरिम बुजुर्गो ! वो शायद गड़रिया ही चला आ रहा है। हमने उसे पहले कभी नहीं देखा ! लेकिन वो हमारे कोरिन्थ से आनेवाले दोस्त का ही हमउम्र और हम अस्र नज़र आता है···वही होगा ···हमारे ही खादिम, उसको ला रहे हैं। अगर आपने उसे देखा है तो आप उसकी शनाख्त कर सकते हैं।

कोरस : हाँ ये वो ही है, मैं इसे जानता हूँ। लायस का गड़रिया ही है।

[गड़रिया ख़ादिमों के साथ आता है।]

इडिपस : मोहतरिम बुजुर्ग, क्या आप इसी शख़्स का ज़िक्र कर रहे थे ?

प्याम्बर : हाँ, ये वो ही शखस है !

इडिपस : इधर आओ ! मेरी तरफ़ देखो ! बताओ, क्या तुम लायस के ख़ादिमों में से थे ?

गड़रिया : जी हुजूर ! मैं ख़रीदा नहीं गया था। मेरी परवरिश की गयी थी।

इडिपस : रोजगार-ए-हयात क्या था ?

गड़रिया : मैं गड़रिया था, हुजूर।

इडिपस : मुल्क़ के किस हिस्से में थे ?

गड़रिया : किथरौन में या उसके आस-पास के इलाक़ों में।

इडिपस : क्या तुमने, इस शख़्स को पहले कभी देखा है ?

गड़रिया : कौन ! नहीं ! मैंने कहाँ देखा होगा ?

इडिपस : ये शख़्स ! क्या तुमने कहीं भी इसको देखा है ?

गड़रिया : कह नहीं सकता हुजूर ! मुझे कुछ याद नहीं !

प्याम्बर : ठहरिये ! मैं याद दिलाता हूँ। याद करो, हम दोनों, किथरौन के आस-पास, भेड़ें चराया करते थे। तुम्हारे पास दो रेवड़ थे और मेरे पास एक। मौसम-ए-सरमा के आग़ाज़ में तुम थीब में वापस

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

चले आते थे और मैं कोरिन्थ चला जाता था। ऐसा ही हुआ था ना ?

गड़रिया : हाँ, ऐसा ही हुआ था। बरसों पहले की बात है।

प्याम्बर : और ये भी याद होगा, तुमने मुझे एक बच्चा दिया था और कहा था कि इसको अपने बच्चे की तरह पालना !

गड़रिया : क्या मतलब ! तुम कहना क्या चाहते हो ?

प्याम्बर : अरे, ये जो सामने खड़े हैं; ये वो ही बच्चा तो है।

गड़रिया : लानत है तुम पर ! ख़बरदार जो फिर ऐसी बात कही !

इडिपस : हम देख रहे हैं, ये शख़्स रास्तगो है और तुम दरोग़गो हो।

गड़रिया : मैंने क्या गुस्ताख़ी की, हुज़ूर !

इडिपस : उस बच्चे के मुतल्लिक, सवाल का ठीक जवाब नहीं दिया।

गड़रिया : ये नहीं जानता, हुज़ूर ! ये क्या कह रहा है ? इसे ग़लतफ़हमी हुई है।

इडिपस : तुम हमें, सख़्ती करने पर, मजबूर कर रहे हो।

गड़रिया : नहीं हुज़ूर ! इस बूढ़ी जान पर सख़्ती न करो !

इडिपस : इसके हाथों को जकड़ लो !

गड़रिया : रहम ! हुज़ूर रहम ! आप और क्या पूछना चाहते हैं ?

इडिपस : ये जिस बच्चे का ज़िक्र कर रहे हैं, तुमने इन्हें दिया था या नहीं ?

गड़रिया : दिया था——ओह ! काश, मुझे उसी वक़्त मौत आ जाती !

इडिपस : अगर तुम सच्च नहीं बोलोगे तो अब आ जायेगी।

गड़रिया : मेरी ज़ुबान से निकले हुए लफ़्ज़ मेरी ही मौत का पैग़ाम होंगे।

इडिपस : फिर इन्कार !

गड़रिया : बता तो दिया, वो बच्चा मैंने इसे सौंपा था। आप और क्या जानना चाहते हैं ?

इडिपस : वो बच्चा, तुम्हारा अपना था या किसी दूसरे का ?

गड़रिया : मेरा नहीं था !

इडिपस : किसका था ? किस ख़ानदान का था ?

गड़रिया : ख़ुदा के लिए और मत पूछो हुज़ूर !

इडिपस : ज़वाब दो ··· अब हमारे मुँह से निकलनेवाले अल्फ़ाज़, तुम्हारी मौत का ऐलान ही होंगे।

गड़रिया : वो ··· वो लायस के ख़ानदान का बच्चा था।

इडिपस : गुलाम था या लायस का अपना खून ?

गड़रिया : मुझे बताना ही पड़ेगा ?

इडिपस : हाँ ! तुम्हें बताना ही पड़ेगा।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

गड़रिया : मुझे तो यही कहा था, ये उसी की औलाद है। मलिका-ए-आलिया इस बात की तसदीक कर सकती हैं।

इडिपस : बज़ात-ए-खुद उसने, वो बच्चा तुम्हारे सुपुर्द किया था ?

गड़रिया : हाँ मालिक !

इडिपस : किस इरादे से ?

गड़रिया : उसको ख़त्म करने के लिए।

इडिपस : माँ होकर !

गड़रिया : हाँ, मालिक ! उन्होंने कहा था, इस बच्चे पर बददुआओं का असर है।

इडिपस : कैसी बददुआ ?

गड़रिया : यही कि ये अपने वालिद का क़ातिल होगा।

इडिपस : तुमने उस बच्चे को इनके हवाले क्यों किया था ?

गड़रिया : बच्चे को मौत के घाट उतारना, मेरे बस का नहीं था। मैंने, इस शख्स के हवाले कर दिया, ताकि ये उसको दूर, अपने वतन ले जाय और अगर वो तुम ही हो तो तुम जैसा बदनसीब और कोई नहीं।

इडिपस : अफ़सोस ! सब पर्दे हट गये। तारीक़ी के सब साये दूर हो गये। अब कुछ पोशीदा नहीं। अब कोई राज़ नहीं। ऐ···काश मैं दिन के उजाले को, कभी न देख सकूँ।—मैं···मैं गुनाहगार हूँ—अपनी पैदाइश का गुनाहगार। अपनी शादी का गुनाहगार ! या खुदा, मैं गुनाहगार हूँ। क़ातिल हूँ ! क़ातिल हूँ !!

[इडिपस अन्दर चला जाता है। प्याम्बर और गड़रिया भी जाते हैं।]

कोरस : इन्सानी जिन्दगी क्या है, आख़िर ? कोई ऐसा शख्स बताइए, जिसकी खुशहाल जिन्दगी एक ख़ाब साबित न हुई हो। इडिपस को ही देखिए और फिर बताइए। इसीलिए कहता हूँ, इन्सान के लिए दायमी मुसर्रत नामुमकिन है।

उसने किस इत्मीनान से, हमें मुसीबत से निजात दिलाने के लिए क़ातिल की तलाश शुरू की थी। वो हमारा मोहतरिम और दिलनवाज शहंशाह था। तमाम थीब उसके नाम का दीवाना था। लेकिन अब—उसकी जिन्दगी से ज्यादा दर्दनाक कहानी किसकी होगी ! ओ, मग़रूर इडिपस ! जब एक ही कोख़ से बाप और बेटे ने जन्म लिया उस वक़्त ये क़ायनात टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर क्यों न गयी ?

Angry
passion

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

वक़्त के धारे वक़्त-बेवक़्त सबको उछालते हैं। वक़्त ने हमें भी उछाला है। और कहा है, देखो! शादी का मज़ाक़ देखो। एक बेटा ख़ाविन्द बना है, देखो! ये हमारी ज़िन्दगी का अलमीया है।

ओ, बदनसीब! लायस के फ़र्ज़न्द, काश हमने तुम्हें देखा न होता। हमारी ज़िन्दगी पर सूरज की तरह चमकनेवाले इन्सान, आज तुम रात के अँधेरों में डूब गये हो।

[खादिम आता है]

ख़ादिम : ऐ थीब के मुअज्ज़िज़ लोगो! सुनो ··जो कुछ अब तुम सुनोगे और जो कुछ देखोगे, उसके लिए आँखों में आँसू भर लो। इस महल की चारदीवारी में जानबूझकर, जो ख़ौफ़नाक और मक़रूह काम किये गये हैं, उनकी ग़लाज़त को इस्टर या फासिस के मुक़द्दस पानी भी साफ़ नहीं कर सकते।

कोरस : हम जो कुछ देख और सुन चुके हैं, उससे ज़्यादा रुलानेवाली बात क्या होगी?

ख़ादिम : मलिका-ए-आलिया वफ़ात पा गयीं।

कोरस : ओह! बदनसीब औरत—उसकी ज़िन्दगी इस अंजाम को कैसे पहुँची?

ख़ादिम : उसने अपने हाथों, अपनी मौत को गले लगाया। ओह, वो ख़ौफ़नाक मन्ज़र—आप खुशकिस्मत हैं, जो आपने उसका अंजाम नहीं देखा। लेकिन मैं मुकद्दर का मारा, उसकी दर्दनाक मौत का मन्ज़र, कैसे भुला सकूँगा?

वो जज़बात के तूफ़ान में बहती हुई अन्दर आयी और पागलों की तरह अपने बालों को जकड़े हुए, अपने कमरे में चली गयी और दरवाज़ा बन्द कर लिया। वो चिल्ला-चिल्लाकर मरहूम लायस को पुकार रही थी और चीख़-चीख़कर अपने मासूम बच्चे के बारे में बताने लगी, जो अपने ही वालिद का क़ातिल था और जिसने अपनी ही माँ के साथ हमबिस्तरी की। जिस कोख़ से जन्म लिया, उसी कोख से, अपने बच्चों को पैदा किया।

ज़ालिम क़िस्मत ने बेचारी पर दोहरा वार किया। ख़ाविन्द से ख़ाविन्द मिला और बेटे से बेटे!

मैंने इतना ही सुना, उसकी मौत का मन्ज़र मेरी नज़रों से छुपा हुआ था। उसी वक़्त शहंशाह चिल्लाते हुए अन्दर आये। सबकी नज़रें उन पर थीं। वो चिल्लाकर बोले—तलवार दो हमें, एक

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

तलवार दो; कहाँ है, वो बीवी, जो मेरी बीवी नहीं, जो सर-ज़मीन है, जहाँ पर मैं एक पौदे की तरह बोया गया था और जहाँ से मैंने खुद ही फ़सल काटी।

वो गुस्से में बड़बड़ा रहे थे। मालूम होता था, उनमें कोई शैतान उतर आया है। कोई भी, ये न बता सका, मलिका-ए-आलिया कहाँ हैं। वो, खुद ही बन्द दरवाज़े को टक्कर मारने लगे। उनकी चोट से दरवाज़ा उखड़ गया और हम सब हैरत-ओ-ख़ौफ़ से देख रहे थे। मलिका-ए-आलिया की लाश रस्सी से बँधी हुई झूल रही थी।

शहंशाह ने भी उसे देखा। उनके मुँह से एक कर्बनाक चीख़ निकली और दीवानावार आगे बढ़कर, रस्सी को खोला।

लेकिन दर्दनाक मन्ज़र अभी और बाकी थे। मलिका-ए-आलिया के लिबास में, सोने का काँटा लगा हुआ था। शहंशाह ने उसे निकाला और एक हाथ के फ़ासले से अपनी आँखों में घोंप लिया। उन आँखों में, जो अब उसकी बेशर्मी, उसकी बेचारगी नहीं देख सकती थीं। अब वो ना तो उन्हें देख सकती थीं, जिन्हें नहीं देखना चाहिए था, ना ही उन्हें देख सकती थीं, जिनके दीदार की तमन्ना उनके दिल में थी। अब उनमें एक लम्बी अँधेरी रात थी।

उन्होंने बार-बार अपनी आँखों को, उन काँटों से छेदा। आँखों से खून के फौवारे उबलने लगे, जो सुर्ख सैलाब की तरह, उनके चेहरे पर फैल गये।

वे दोनों गुनाहगार थे। एक मर्द और एक औरत! और गुनाह की सज़ा उन दोनों को मिल गयी। कल तक उनकी जिन्दगी में खुशी थी, शादमानी थी लेकिन आज आँसू, तबाही, बर्बादी, मौत और जितनी भी लानतें हैं, उन पर बरस रही हैं।

कोरस : शहंशाह अब कैसे हैं? क्या अब भी, वो उसी तरह तड़प रहे हैं?

ख़ादिम : वो चिल्ला रहे थे, दरवाज़ा खोल दो, दरवाज़ा खोल दो और दुनियाँ को दिखाओ; अपने वालिद का क़ातिल कैसा होता है? अपनी माँ का ''' अफसोस मैं वो सबकुछ नहीं कह सकता।

वो अपने ही होंठों से निकली हुई, बददुआ को पूरा करने के लिए, चुपचाप इस मुल्क से बाहर चले जायेंगे। अभी उनमें ऐसी हिम्मत नहीं है कि वो ऐसा कर सकें। कोई उनकी रहनुमाई करनेवाला नहीं। ये सदमा—ये चोट--- ये दर्द नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

दरवाज़ा खुल रहा है। बेचारगी की एक तस्वीर आनेवाली है, जिसे आप हिक़ारत से नहीं, रहम के साथ देखेंगे।

[इडिपस आता है।]

कोरस : या खुदा ! ये बदनुमा दाग़, ये दर्दोकर्ब की हालत-- ये बर्दाश्त से बाहर है। ज़ालिम क़िस्मत का कैसा मज़ाक है ?

ओ ! बदनसीब इन्सान, जिसको देखने के लिए, हमारी आँखें तरसती थीं, उसे देखते हुए डर लगता है। मैं ये मक़रूह मंज़र नहीं देख सकता।

इडिपस : ऐ मेरे दिल से उठनेवाली, दर्द की टीसो ! क्या ये मेरी ही आवाज़ है, जो हवा में सरसरा रही है ? ये मुझे क्या हो गया है ?

कोरस : ऐसी हालत, जिसे कान सुनना और आँख देखना गवारा न करे !

इडिपस : ओह ! ये रात---ये अँधेरी रात -- अब कभी सुबह नहीं देखेगी ! आह---फिर टीस उठी---उठो दर्द की टीसो ! उठो और जिस्म को चीरती हुई---यादों के अँधेरों मे खो जाओ !

कोरस : ऐसा ही होना चाहिए। ऐसी तकलीफ़, दो बार बर्दाश्त करनी पड़ती है। पहले जिस्मानी तौर पर, फिर रूहानी तौर पर।

इडिपस : क्या मेरा मेहरबान दोस्त ! अब भी मेरे पास खड़ा है ? तुम्हारे हाथ इस अन्धे की रहनुमाई करेंगे। क्या तुम मेरे नज़दीक ही हो ? मैं तुम्हारी आवाज़ सुन सकता हूँ लेकिन देख नहीं सकता।

कोरस : ये आँखें---ये तुमने क्या किया ? किस शैतानी कुव्वत ने, तुम्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया ?

इडिपस : अपोलो ने मेरे दोस्त---अपोलो ने ही मुझे, अपने इताब का मर्कज़ बनाया है। और ये सब मैंने, अपने ही हाथों से किया है। जब चारों तरफ़ ग़लाज़त और बदनुमाई ही देखने को थी तो फिर इन आँखों का क्या करता ?

कोरस : इसमें कोई शक नहीं !

इडिपस : अब मेरी आँखों के लिए, कोई दिलफरेब मन्ज़र नहीं। कानों के लिए कोई दिलनवाज़ नग़मा नहीं-- चलो मुझे इस सरज़मीन से दूर ले चलो --यहाँ के देवता भी, मेरे वजूद से नफ़रत करते हैं।

कोरस : ओ बदनसीब इन्सान ! काश तुम अपनी पैदाइश का राज़ जानने के लिए ज़िन्दा ही न रह जाते।

इडिपस : बुरा हो उसका, जिसने मेरे पाँव आज़ाद किये और मौत के बदले,

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

जिन्दगी अता की —एक फ़जूल-सी जिन्दगी— मौत हमारे लिए, एक दिलफ़रेब इनाम होती !

कोरस : काश ! ऐसा ही होता ।

इडिपस : अब मैं क्या हूँ ? अपने वालिद का क़ातिल ! अपनी माँ का खाविन्द ! अपने ही बेटों का भाई और भी न जाने क्या-क्या, इडिपस के नाम से मन्सूब किया जायेगा !

कोरस : फिर भी, मेरी नाचीज़ राय में, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए । अँधेरे की ज़िन्दगी से तो मौत बेहतर थी ।

इडिपस : नहीं । मैं जानता हूँ, इससे बेहतर कोई रास्ता नहीं था । मैं भला अपने मरहूम वालिद से, कब्र में कैसे आँखें मिलाता ? उस नेक-दिल औरत के सामने, मेरी आँखें कैसे उठतीं, जिसके साथ मैंने ऐसा गुनाह किया, जिसका कफ़ारा मौत से भी नहीं हो सकता । क्या मैं, अपने अजीज़ बच्चों को देख सकता, जो मेरे बेटे भी हैं और भाई भी ! क्या मैं इस मुक़द्दस शहर के मीनारों का नज़ारा कर सकता, जिसकी हिफ़ाजत के लिए, मैंने नापाक़ वजूद को मुल्क-बदर करने का हलफ़ लिया था और अब जबकि, वो नापाक वजूद मैं खुद हूँ, क्या मैं थीब के बाशिन्दों की निगाहों की ताब ला सकता ? नहीं ! मैं सुन भी नहीं सकता । काश, मैं इस नापाक जिस्म को, लाइल्मी की तारीकियों में ग़र्क कर सकता और इस दर्दोकर्ब से कुछ सकून मुयस्सर होता !

किथरौन मेरी दाईमाँ ! क्या तुमने मुझे, इसी रोज़ के लिए सहारा दिया था ? उसी वक्त क्यों नहीं मुझे ख़त्म कर दिया ? क्यों ये बताने के लिए ज़िन्दा रखा कि मैं किस तरह पैदा हुआ हूँ ? कोरिन्थ-पोलिबस, मेरे सरपरस्त ! मेरे वालिद ! क्या आप एक पल के लिए भी, ये जान सके कि आपके साया-ए-शफ़क़त में एक गुनाह पल रहा है । जो मुजस्सम गुनाह है । जंगलों के ख़ामोश सीने में, सोया हुआ वो तिराहा, जिसको मैंने अपने वालिद के खून से रँगा, अपने खून से सींचा, क्या उसे याद होगा ? मैं वहाँ से गुजरकर थीब आया था । एक गुनाह-ए-अजीम करने के लिए, उसी कोख से औलाद पैदा करने के लिए, जहाँ से मैं खुद पैदा हुआ था । बाप, भाई और बेटा—दुल्हन, बीवी और माँ दोनों एक जोड़ा बने । इन्सानी ज़िन्दगी की तमाम गन्दगी, तमाम ग़लाज़ात, एक ही जुर्म में, इकट्ठी हो गयी । हाय, वो नाकाबिल-ए-बयान वाक़यात —अब मैं कुछ नहीं कहूँगा ।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

मुझे, छुपा लो ! खुदा के लिए, मुझे छुपा लो ! मुझे दूर ले चलो, जान से मार डालो, समुन्दर के सीने में ग़र्क कर दो। ले चलो !

कोरस बचने की कोशिश करता है

मुझ पर रहम करो, मुझे छुओ, नजदीक आओ, डरो नहीं, इस सजा के कोड़े, सिर्फ़ मेरे लिए ही हैं।

कोरस : क्रियान आ रहा है। इस नाजुक मौक़े पर, वो ही हमारी उम्मीद का मरक़ज है। वो ही आपकी ख्वाहिश पूरी कर सकता है।

इडिपस : मैंने उसके साथ कितनी ज्यादती की थी। अब मैं उसे किस मुँह से कहूँ।

[क्रियान आता है।]

क्रियान : इडिपस, मैं तुम्हारी तनज़्ज़ली का मज़ाक उड़ाने नहीं आया। ना ही तुम्हें कोसने आया हूँ। मेरे दोस्तो ! मख़लूक-ए-इन्सान का, ना सही उस अज़ीम ताबनाक ताक़त का ख़याल करो, जो हमारे ऊपर रौशन है, हमें ज़िन्दगी देती है। ये ठीक है, इस नापाक वजूद को कोई पनाह नहीं देगा लेकिन हम इसकी मुसीबतों और ग़मों में शरीक हो सकते हैं। इसको अन्दर ले चलो !

इडिपस : मेहरबान दोस्त ! एक इल्तजा है, मुझे नाउम्मीद न करना। इसमें तुम्हारी भलाई भी है !

क्रियान : तुम क्या कहना चाहते हो ?

इडिपस : मुझे इसी वक्त इस सरजमीन से दूर, चश्म-ए-इन्सानी से दूर, कहीं और भेज दो।

is Politics

क्रियान : ऐसा कभी का हो चुका होता लेकिन मैं देवताओं के हुक्म का इन्तजार कर रहा हूँ।

इडिपस : देवता पहले ही अपना हुक्म दे चुके हैं। बदनसीब क़ातिल को सजा-ए-मौत का हुक्म हुआ था। लेकिन वो यहाँ खड़ा है।

क्रियान : मौजूदा हालात में मज़ीद रहनुमाई की जरूरत है।

इडिपस : मुझ जैसे गुनाहगार बदनसीब के लिए, देवताओं के हुक्म का इन्तजार किया जा रहा है ?

क्रियान : क्या अब भी उसकी ताक़त पर यक़ीन नहीं आया ?

इडिपस : तुम ठीक कहते हो ! एक अर्ज और है, वो जो अन्दर पड़ी है, तुम्हारी बहन, उसकी आख़िरी रसूमात, उसकी शान-ए-शायाँ हों और मुझे सुनसान पहाड़ों पर भटक-भटककर इस जिन्दगी की बन्दिशों से, आज़ाद होने दिया जाय।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

ऐ किथरौन के वसीह पहाड़ो ! मेरे वाल्देन ने तुम्हारी वादियों को मेरी मौत के लिए मुन्तख़िब किया था। मैं उनकी, ये ख्वाहिश अब पूरी करूँगा। मैं तुम्हारी वादियों में ही, इस नाकर्दा ज़िन्दगी से राह-ए-फ़रार हासिल करूँगा। लेकिन मेरी मौत इतनी आसान नहीं होगी। मैं मौत के चंगुल से एक बार बच गया था। लेकिन अब निहायत इबरतनाक ढंग से मौत मुझसे हमआग़ोश होगी।

क्रियान ! मैं अपने लड़कों की जानिब से बेफ़िक्र हूँ। वो ज़िन्दगी में, अपनी राहें खुद इस्तवार कर लेंगे। लेकिन उन मासूम बच्चियों को, ज़माने की गर्म-सर्द से महफ़ूज़ रखना। वो आज तक पल-भर के लिए भी, मुझसे जुदा नहीं हुईं।

क्रियान ! रहमदिल क्रियान ! इजाज़त हो तो मैं एक बार--सिर्फ एक बार अपने बच्चों को छू सकूँ और अपने आंसुओं से, अपने दिल का गुबार हल्का कर सकूँ !

इजमेनी और एन्टिगनी आती हैं

क्या मेरी ज़िन्दगी की अमान सिसक रही हैं ? रहमदिल क्रियान ने उन्हें यहाँ भेज दिया है। बोलते क्यों नहीं ? क्या वो यहाँ हैं ?

क्रियान : हाँ, मैंने उनको यहाँ बुला लिया था। मैं जानता था, तुम उनको बहुत मुहब्बत करते थे और अब भी करते हो !

इडिपस : क्रियान, इस कार-ए-सवाब के लिए, तुम्हें खुदा जज़ार देगा। आओ बच्चो ! अपने बदनसीब भाई के हाथों को छुओ; इन्हीं हाथों ने तुम्हारे वालिद की आँखों में अँधेरे भर दिये हैं, जो आँखें होते हुए भी, नहीं देख सकता था कि वो क्या कर रहा है ? ये आँखें तुम्हें देख नहीं रही हैं, मेरे बच्चो —ये रो रही हैं। खून के आँसू बहा रही हैं। मुझे तो आनेवाले दिनों का ख़याल तड़पा रहा है। चारों तरफ़ खुशी-ओ-मुसर्रत के हंगामे होंगे, रक्स-ओ-सरूर की महफ़िलें होंगी लेकिन तुम उन सबसे बेनियाज़, कर्ब-ओ-यास की तस्वीर बनी, घर में रहोगी और जब तुम ब्याह के क़ाबिल हो जाओगी, उस वक्त कौन आयेगा, जो इस दाग़-ए-रुस्वाई के बावजूद; तुम्हें अपनाने को तैयार होगा ? सब यही कहेंगे, ये उसकी बेटियाँ हैं, जो अपने ही वालिद का क़ातिल है, जिसने अपनी ही माँ के साथ हम-बिस्तरी की। जो अपने ही बच्चों का भाई भी है। तुम अपने शरीक़-ए-हयात कहाँ से पाओगी ? कोई नहीं होगा, मेरी बच्चियो --तुम ताहयात ऐसे ही कुंवारी रहोगी !

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

क्रियान, अब तुम ही इनके वालिद हो। ये बेचारी, मेरी तरह दर-दर न भटकने पायें। इनका अपना घर हो, अपना कुन्बा हो। ये अभी नाबालिग हैं, अब तुम ही इनकी ज़िन्दगी के अमान हो। वादा करो मेरे दोस्त!

क्रियान हाथ मिलाता है

शगुफ़ता कलियो! ज़िन्दगी अभी बहुत से सबक़ तुमको सिखायेगी। लेकिन अपने लिए, हमेशा मुझसे बेहतर ज़िन्दगी की दुआ माँगना।

क्रियान : बहुत हो चुका! क्या तुम अन्दर चलोगे? Attitude

इडिपस : मजबूरी है। जाना ही पड़ेगा— तुम्हें अपना वादा याद है ना!

क्रियान : कैसा वादा!

इडिपस : मुझे मुल्क-बदर करने का।

क्रियान : इसका फ़ैसला देवता करेंगे, मैं नहीं।

इडिपस : कोई देवता मेरे हक़ में नहीं बोलेगा!

क्रियान : यकीन रखो, तुम्हारी ख्वाहिश पूरी की जायेगी।

इडिपस : मुझे अन्दर ले चलो!

क्रियान : जाओ—बच्चों को यहीं रहने दो!

इडिपस : नहीं! इनको मुझसे जुदा मत मरो!

क्रियान : हुक्म नहीं···तामील हो।

[सब चले जाते हैं।]

कोरस : थीब के लोगो! देखो, ये इडिपस जा रहा है। अशरफ़-उल-मख़लूक़ात इडिपस! जिसको अपनी ताक़त पर नाज़ था। जो दुनियाँ-भर के राज़ों से वाक़िफ़ था। जिससे सब इन्सान हसद करते थे, देखो! उस पर तबाहियों के बादल मँडला रहे हैं।

याद रखो! इन्सान को, कभी अपना अन्जाम नहीं भूलना चाहिए, और कोई भी शख्स; तब तक खुशक़िस्मत नहीं कहा जा सकता, जब तक, वो अपनी खुशियों को कब्र तक साथ न ले जाय।

०००

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner